
COP प्रकाशन
अनिक प्लैनेट
नवम्बर 2016
सफर का सारांश
मौत के बाद
बचपन की वो कॉमिक्स
जम्बू विशेषांक
हमारे नायकों के प्रेरणास्रोत
अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद
cover art by Harendra Saini

क्या है अनिक?

कॉमिक्स ...... नाम सुनते ही कई सारी खट्टी मीठी यादें दिमाग में कौंध जाती हैं। और आखिर हो भी क्यों ना? हमारा बालपन जो इसके साथ बीता है।
चित्रों के साथ कहानी का मजा दोगुना हो जाता है। कॉमिक्स के कितने ही पात्र हमारी कल्पना जगत में एकदम सजीव हो जाते थे फिर चाहे वो नागराज की तरह आगे के बाल मोड़ के खुश होना हो, ध्रुव की तरह अपने पैन्ट शर्ट के ऊपर अपनी अंडरवियर और बनियान पहनना, सुपरमैन की तरह चद्दर का केप पहनना, या फिर कोई सवाल जल्दी हल करके ये बोलना कि चाचा चौधरी का दिमाग कंप्यूटर से भी तेज चलता है।

आज के समय में जब और भी साधन मौजूद हैं मनोरंजन के तो कॉमिक्स के प्रति आज बच्चों का रुझान कम हुआ है। हमारा म मैगजीन निकालने के पीछे एक कारण ये भी है की आज पाठक वर्ग ऑनलाइन ज्यादा एक्टिव रहता है। इस माध्यम से हम ज्यादा लोगों तक अपनी बात पहुँचा सकते हैं और उनकी प्रतिक्रिया भी जान सकते हैं। इससे हमें भविष्य में और बेहतर करने की प्रेरणा मिलेगी।
अनिक में आपको अपने जैसे प्रशंसको के द्वारा लिखी गयी कहानियाँ और कवितायें पढ़ने को मिलेंगी। ये एक मंच है जहाँ से आप अपने अंदर की प्रतिभा लोगों को दिखा सकते हैं।

समय के साथ हममे से बहुत लोगों ने कॉमिक्स पढ़ना छोड़ दिया लेकिन बहुत से लोगों ने कॉमिक्स पढ़ना जारी रखा।
हमारी मैगजीन दोनों ही तरह के पाठकों के लिए है। अगर आप कॉमिक्स पढ़ना छोड़ चुके हैं तो हमारी मैगजीन के माध्यम से आप अब तक के सारे अपडेट से वाकिफ हो सकते हैं। हमारी वेबसाइट और व्हाट्सएप्प ग्रुप से भी जुड़कर आप अपनी जानकारी बढ़ा सकते हैं और अपनी जिज्ञासा शान्त कर सकते हैं। और यदि आपने कॉमिक्स पढ़ना छोड़ा नहीं है अब तक, तो ये मैगजीन आप के लिए ही है।

आज के दौर में जब भारतीय कॉमिक्स इंडस्ट्री अपने अस्तित्व और पहचान के लिए जूझ रही है, **अनिक** एक प्रयास है इस इंडस्ट्री के प्रति हमारे प्यार का,हम सब कॉमिक्स प्रेमियों की तरफ से।

– रजनीश मिश्रा

जम्बू

पात्र परिचय • राम चौहान

प्रकाशन -तुलसी कॉमिक्स
पहली कॉमिक - सुपर कंप्यूटर का बाप

जम्बू का जन्म – भारत द्वारा अमेरिका से एक सुपर कंप्यूटर अमेरिका से माँगा जाता है जिस पर अमेरिका मना कर देता है । डॉ.भावा एक देशभक्त वैज्ञानिक है और वह अपने देश का यह अपमान बर्दाश्त नहीं कर पाता और ३ साल की अथक मेहनत के बाद एक सुपर कंप्यूटर तैयार करता है । जिसका नाम वह जम्बू रखता है।'

जम्बू का सफर – 'डॉ। भावा जम्बू को बनाते हैं और ये बात अमेरिका को पता चल जाती है। अमेरिका भावा के इस आविष्कार से जल भुन जाता है और वह डॉ.भावा और उसके परिवार को मारने का कॉन्ट्रैक्ट एक गिरोह को दे देता है । इस हमले में डॉ। भावा घायल हो जाता है और मरने की कगार पर पहुँच जाता है । डॉ भावा जम्बू को अपना दिमाग उसमें फिट करने को कहता है और इस प्रकार जम्बू एक सोचने समझने वाला रोबोट बन जाता है। अमेरिका के एक विलेन के षड्यंत्र से जम्बू द्वारा बनाया जम्बू नंबर २ गलत हाथों में पद जाता है जिसमें एक आतंकवादी का दिमाग डाला जाता है और जम्बू को बदनाम करने के लिए वह अपने आका के साथ आतंक फैलता है और डॉ। भावा की पत्नी सावित्री को मार देता है। सिर्फ बंटी अकेला रह जाता है और उन्हे ज्वाइन करता है कैप्टन बकरा।
जम्बू न सिर्फ देश विदेश में, बल्कि कई ग्रहों के प्रॉब्लम सॉल्व करता है और इसी दौरान उसका सामना खुद की तरह दिखने वाले खलनायक शनिश्चर से होता है जो बिलकुल जम्बू की तरह होता है।'

जम्बू के साथी – 'यूँ तो जम्बू अकेले ही कई सौ लोगों के बराबर होता है लेकिन वक़्त के साथ जो उसके साथ खड़े होते हैं वो थे,डॉ। भावा की पत्नी,उनका बेटा बंटी और कैप्टेन बकरा।
बंटी जहाँ मार्शल आर्ट में एक्सपर्ट है वही कैप्टन बकरा नेवी से है।अक्सर जम्बू इनकी सहायता से कई केस सॉल्व कर चुका है।'

जम्बू की ताकत – 'जम्बू में कई शक्तियां है,जैसे अपने शरीर के हर हिस्से को अलग अलग संचालित करना और अपने शरीर को असाधारण गति से रोटेट करना । उसके पैरों में ड्रिल है जिससे वह सुरंग खोदने जैसे काम लेता है। जम्बू की आँखों से बुलेट और शार्प राउंड ब्लेड्स निकलते है। वह हवा में उड़ सकता है और पानी में भी रह सकता है। उसके हाथों से ब्लू रेज निकलटी हैं जो किसी को भी जड़ अवस्था में कर सकती हैं । मस्तक से कटिंग डिस्क छोड़ना, पैर में ड्रिल,शारीर से आटोमेटिक मशीन गन से गोली मरता है,तीसरी अंख से लेज़र जैसे कई पावर उसे बाकि हीरोज से अलग और आगे खड़ा करते हैं।'

जम्बू का भविष्य – ' जम्बू द्वारा बनाये गये दो रोबोट जिन्हें जम्बू के बेटे नाम दिया गया वह भी बहुत शक्तिशाली थे और उन्होंने अंगारा और तौसी के भी छक्के छुडाये थे।'

सफर का सारांश

कवर स्टोरी • मोहित शर्मा ज़हन

स्वर्गीय कार्टूनिस्ट प्राण कुमार शर्मा जी को २०१५ में मरणोपरांत पद्म श्री सम्मान मिलना उनकी बरसो की मेहनत और प्रतिभा के सम्मान के साथ भारतीय कॉमिक्स जगत की विजय भी थी। प्राण जी, अंकल पाई (अनंत पाई), भारत नेगी जी, आबिद सुरती जी जैसे अनेको कलाकारों, लेखको ने १९६० के दशक से हर क्षण जो इतने काल्पनिक ब्रह्माण्डों की खोज कर उन्हें सजाया–संवारा, उनको आखिरकार एक बड़ी स्वीकृति मिली। वैसे कॉमिक्स को किसी स्वीकृति की आवश्यकता नहीं पर ऑन रिकाड्र्स आने से कई बातें बदलती है, कलाकार मुख्यधारा में आते हैं और कई नए लोग किसी एक चीज़ से जुड़ते हैं। साथ ही साथ देने के लिए कुछ उदाहरण बनते हैं और दिलासा मिलता है कि राह उतनी दबी–कुचली नहीं जितनी बताई जाती है। पिछले साल मेरठ में लेखक श्री परशुराम शर्मा से बात–चीत का अवसर मिला। अपने कॉमिक्स लेखन के दौर को याद करते हुए उन्होंने बताया कि कम साधनो में कलाकार–लेखक अधिक मेहनत करता है। चीज़ों के बढ़ने और व्यावसायिक हो जाने पर कई कलाकार बदल जाते हैं। इस स्थिति में ही कला के लिए भूखे सच्चे कलाकार की परख होती है। उनके अनुसार भारत में कॉमिक कभी ऐसे बड़े स्तर पर नहीं पहुँच पायी जिसके वह लायक थी, पर उन्हें आशा है आगे ऐसा होगा।

एक कलाकार अपनी कला, कहानी अपने हिसाब से बताना चाहता है और कई कलाकारों के लिए क्रमबद्ध कला एक अच्छा माध्यम है। विश्व और भारत में कॉमिक्स काफी पहले से हैं पर उनकी पहुँच सीमित रही, जिस वजह से कई लोग कॉमिक्स को शुद्ध साहित्य में शामिल नहीं करते। कइयों के अनुसार तो साहित्य में कॉमिक्स की कोई जगह नहीं। यही कारण है कि भारत में कॉमिक्स एक बड़े स्तर और जनमानस तक नहीं जा पायी। इन्हें बच्चो, नादानों के मनोरंजन की चीज़ कहकर नकारा जाता रहा। फिर इसके साथ ही अख़बारों, पत्रिकाओं में छपने वाली राजनैतिक और सामाजिक कॉमिक स्ट्रिप, कार्टून लोग बड़े चाव से पढ़ते रहे। यानी कला के उसी स्वरुप का अपनी सुविधा अनुसार बदले नज़रिये से आनंद लेना। मैं हमेशा कहता आया हूँ कि कॉमिक्स किसी मल्टीमीडिया मनोरंजन साधन से कम नहीं बल्कि चित्र, संवाद–कहानी को आराम से समझने के हिसाब से कॉमिक्स अन्य मल्टीमीडिया साधनो से कहीं बेहतर हैं। इन्टरनेट के आगमन के बाद लोगो, चीज़ों की व्यवस्था कुछ आसान हो गयी, जिसके चलते कई कलाकारों ने स्वतंत्र (इंडिपेंडेंट) रूप से कॉमिक्स बनाना और ऑनलाइन, प्रिंट में प्रकाशित करना शुरू किया। इनमे से अधिकतर कुछ कॉमिक के बाद गायब हो गए जबकि कुछ ने अपना संघर्ष जारी रखा। कुछ लोगो के लिए फायदे–नुक्सान से बढ़कर कला के लिए प्रेम होता है, जो उन्हें शुरुआती दौर की असफलताओं या आशा अनुरूप परिणाम ना आने पर भी किसी ना किसी तरह आगे बढ़ने को प्रेरित करता

रहता है। मेटा–देसी कॉमिक्स, होली काऊ एंटरटेनमेंट, आयुमी, रेड स्ट्रीक पब्लिकेशन्स, एम्–बी स्टूडियो ऐसे कुछ नाम हैं। एक सप्लाई चैन प्रक्रिया की तरह तैयार होने वाली कॉमिक का हर स्टेप चाहे वह आईडिया या परिकल्पना चरण हो या कलरिंग (रंग) चरण रचयिताओं में अलग उत्साह लाता है। इस उत्साह को अगर आम जनता के छोटे हिस्से का सहारा मिल जाए तो काफी अंतर पड़ सकता है क्योकि भीड़ के रुख में काफी ताकत होती है। बाहर के कॉमिक्स, एनिमेशन और उनपर आधारित फिल्मो का जिस भारत में इतना बड़ा दर्शक वर्ग है, उसी देश के घरेलु उद्योग लोगो के लिए तरस रहे हैं। २०११ से दिल्ली, मुम्बई, बंगलुरु, हैदराबाद में आयोजित हो रहे कॉमिक कॉन इवेंट्स में विदेशी किरदारों के प्रति जुनून देखते ही बनता है। करोडो भारतियों को इन सुपरहीरोज़, कॉमिक सीरीज के नाम, शक्तियां, सहायक किरदार और इनकी मुख्य कहानी पता है। अच्छा लगता है कि बढ़िया काम के लिए प्रशंसको की दीवानगी सात समंदर पर तक गूँज रही है। काम के जिस स्तर की भीड़ को आदत पड़ चुकी है उस स्तर का काम लाने के लिए देसी प्रकाशकों के पास दाम नहीं हैं। अब अगर थोड़ी सी भीड़ भी छिटक कर यहाँ आ जाए तो भारत से ना जाने कितने प्रतिभावान कलाकार और यादगार कॉमिक्स निकले। अमेरिका और जापान की तरह भारत के किरदार दुनियाभर के लोगो के चहेते बन जाए। होता यह है कि अपनी पहचान बनाने और जीवन के संघर्ष में नए कलाकार कुछ समय बाद कोई और राह पकड़ लेते हैं।

१९८० के दशक तक कॉमिक का एक ख़ास पाठक वर्ग बन गया था, इतना भर की कॉमिक छापने वालो को कुछ मुनाफा हो। अभी भारतीय कॉमिक्स, विदेशी किरदारों जैसे फैंटम, मैनड्रैक, ही मैन, आर्ची आदि के स्थानीय भाषाओँ में हुए अनुवादों और कुछ पत्रिकाओं के सहारे टिकी थी। फिर डायमंड कॉमिक्स, राज कॉमिक्स, मनोज कॉमिक्स, तुलसी कॉमिक्स और अमर चित्र कथा ने मोर्चा संभाला। इन प्रकाशनों की सीरीज और किरदारों ने कई साहित्य प्रेमियों के मन में जगह बनाई। टीवी, रेडियो के गिने–चुने विकल्पों में और बिजली की किल्लत ने कॉमिक्स का पाठक वर्ग बढ़ाया। नयी विधा का प्रारूप और किरदार पाश्चात्य मॉडल के अनुसार रहा, इसके कुछ फायदे और कुछ नुक्सान हुए। जहाँ प्रकाशकों, कलाकारों के पास तुलना करने के लिए कुछ था, वहीं अक्सर भारतीय कॉमिक्स की कहानियों और चित्रांकन में मौलिकता की कमी देखी गयी। १९९० के दशक में कॉमिक्स का जादू इस चरम पर था कि राज कॉमिक्स, डायमंड कॉमिक्स, मनोज कॉमिक्स, तुलसी कॉमिक्स के किरदार लुगदी साहित्य जैसी रिकॉर्ड तोड़ लाखो की बिक्री कर रहे थे। हिंदी–अंग्रेजी के अलावा तमिल, बांग्ला, गुजरती भाषाओं में कुछ स्थानीय प्रकाशन नियमित अंतराल पर कॉमिक्स प्रकाशित करते रहे। अमर चित्र कथा, इंद्रजाल और डायमंड कॉमिक्स मांग के अनुसार दर्जनों भारतीय भाषाओं में कॉमिक्स छापती हैं। हालाँकि, ९० दशक के अंत तक स्थिति बदली और कई कॉमिक प्रकाशन बंद हो गए या बंद होने की कगार पर आ गए। बची हुई कंपनियां अपने पुराने पाठक वर्ग के सहारे चलती रहीं। धीरे–धीरे अंतर्राष्ट्रीय पटल पर चमक रहे भारतीय कलाकार विदेशी प्रकाशनों के लिए काम करने लगे। २००३–२००४ से भारत में “कॉमिक्स कल्चर” बनाने की कवायद शुरू हुई, ऐसा पहली बार नहीं था। भारत में विशाल जनसंख्या के एक बड़े हिस्से की पढ़ने की आदत को देखकर पहले भी मार्वल, डी.सी। जैसे प्रकाशनों ने ८० के दशक में यहाँ पैर जमाने की असफल कोशिशें की थी। अक्सर नए इंडी कॉमिक

टाइटल्स पर किशोर कलाकारों के नाम देखकर एक उम्मीद जगती है कि भविष्य में निखर कर ये कलाकार क्या कमाल करेंगे। फिर कुछ पुराने उदाहरण याद आते हैं जो ऐसे ही थे पर पैसो या अवसर के अभाव में अन्य क्षेत्रों में चले गए। कलाकारों की उपलब्धता आसान होने और कम खर्च में प्रकाशन होने से कुछ लोगो ने इस क्षेत्र में निवेश किया। इनमे से अधिकतर निवेश बेकार गए क्योकि ये सभी निवेश छोटे समय दायरे में मुनाफा कमाते एक व्यापर की दृष्टि से किये गए थे, जबकि कॉमिक्स से जुड़कर, समय के साथ अपना आधार बढ़ाते हुए गिने–चुने लोगो ने काम किया। लाइट या शैक्षिक विषयों पर आ रही पत्रिकाओं जैसे टिंकल, बाल हंस, चंपक, नंदन, बाल भारती, नन्हे सम्राट और डायमंड कॉमिक्स की कई सीरीज के बाजार में सदाबहार विषयों और १३ से कम आयु वर्ग की निश्चित सामग्री के कारण स्थिरता रहती है। अगर कॉमिक्स के विषय एक्शन, एडवेंचर, डार्क या प्रयोगात्मक होते हैं तो प्रकाशक के लिए लंबे समय तक टिके रहना एक चुनौती बन जाती है। बदलते समय, परिवेश के अनुसार कॉमिक्स उद्योग के ढलने की गति कुछ धीमी दिखाई पड़ती है, शायद कुछ नए कलाकार, प्रकाशन, अधिक पाठक जैसे घटक से यह रफ़्तार बढे।

क्या ९० के दशक सी स्थिति दोबारा आएगी यह तो कहा नहीं जा सकता, इस बीच अगर भारतीय कॉमिक किरदारों को फिल्म उद्योग या टेलीविजन जगत का सहारा मिल जाए तो क्या कहने! हाँ, पहले की तरह कला को समर्पित कलाकारों, लेखको और दीवाने प्रशंसको को देखकर एक बात ज़रूर कही जा सकती है कि मंद पड सकती हैं पर कॉमिक्स कभी ख़त्म नहीं होंगी।


छोड़ दो जंगल और लौट आओ वुल्फानो क्योंकि
वुल्फानो में ही छिपा है वो राज जो बनेगा भेड़िया वंश
की पुनः स्थापना का जरिया जो है......
अनुराग कुमार सिंह प्रस्तुत करते हैं
वंशबीज

शनिश्चर की वापसी

कहानी • राम चौहान

शनि ग्रह पर अब 'सिल्ले' का राज था और वो एक अच्छा राजा था।उसे यहाँ राजा बने काफी समय हो गया था। काबू के निवासी भी उसके शासन में खुश थे।

लेकिन खुशहाली पर किसी की नजर लग ही गई। वो 'शनिश्चर' था। काबू के पानी की धार ने उसे गला दिया था("शनिश्चर कॉमिक ")।पर उसका गला हुआ शरीर एक जगह इकट्ठा हो रहा था।अब उसके गल चुके शरीर का बहना रूक चूका था।

उसका गला हुआ शरीर अब आपस में जुड़ने लगा। कुछ ही देर में उस जगह शनिश्चर खड़ा था।

"जम्बू......मै आ रहा हूं। "

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

बंटी घर आया ही था और सीधे किचन में जा घुसा। फ्रिज में कुछ फल रखे थे जो उसने उठाये और वापस हॉल में लौटा।

"ऊप्स.. "उसके मुंह से निकला।

सामने जम्बू नजर आया।सोफे पर बैठा हुआ वो खुद को अपग्रेड कर रहा था।

उसे सामने सबकुछ लाल रंग का नजर आ रहा था।

Upgrading complete

जम्बू उठ खड़ा हुआ।सामने ही बंटी नजर आया।

बंटी मुस्काया। "खुद को अपग्रेड कर रहे थे।अच्छा है। "

जम्बू बोलाः– "करने की जरूरत भी थी बंटी।अब वक्त बदल गया है। "कुछ देर रुककर वो बोला। "मुझे कैप्टेन बकरा से मिलने जाना है, उसे मुझसे कुछ काम था शायद.. "

अभी उनकी बात खत्म भी नहीं हुई थी कि एकाएक जोरदार भूकम्प उन दोनों ने महसूस किया।

"ये क्या था?"बंटी बोला।

"शायद भूकम्प। "जम्बू बोला और बाहर की तरफ चल पड़ा।

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

कुछ ही देर में जम्बू वापस आ गया।

बंटी उसके आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

"क्या हुआ था जम्बू? "बंटी बोला।

"बाहर भूकम्प आया था। "जम्बू निश्चिन्त होकर बैठ गया।

बंटी का माथा ठनका।

"अगर कोई भूकम्प आया भी था तो जम्बू बिना किसी की मदद किये वापस क्यों लौट आया? "(मन में)

जम्बू ने उस पर किसी तरह का ध्यान नहीं दिया।

कमरे में एक गैस फैलने लगी।जम्बू मशीन था इसलिए उसे कोई फर्क नहीं पड़ा।पर बंटी का दम घुटने लगा।

"जम्बू.. "बंटी खांसने लगा। "यहाँ कोई गैस फैली हुई है।हमे यहाँ से निकलना होगा। "

जम्बू अपनी जगह से न हिला।बल्कि मुस्कुरा पड़ा। "ऐसा कुछ नहीं है बंटी।तुम्हे गलतफहमी हुई है। "

अचानक बंटी की नजर जम्बू के सीने में बने लोगो पर पड़ी।

"शनिश्चर?? "उसके मुंह से निकला। "तुम शनिश्चर हो? "

शनिश्चर की आँखों से डिस्क निकल पड़ी।

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

जम्बू बाहर निकला ही था कि कई इमारतें धराशाई नजर आई।जम्बू उसके नीचे दबे लोगो को निकालने लगा।

कई लोग बाहर आ चुके थे और कई अब भी अंदर फंसे हुए थे।जम्बू की कोशिशें जारी थी।

आखिर सभी बाहर आ चुके थे।कुछ लोग बुरी तरह घायल भी हो गए थे।घायलों को अस्पताल ले जाया जा रहा था।जम्बू की नजरें चारो तरफ घूमी।हर तरफ सिर्फ तबाही फैली थी।

जम्बू की नजर भूकम्प के केंद्र की ओर गई।सड़क के बीचों बीच एक बहुत गहरा गड्ढा बन गया था।

जम्बू ने जब गड्ढे का निरीक्षण किया तो उसकी आँखे फ़टी रह गई।

"सिल्ले? "उसके मुंह से निकला।
वो सिल्ले ही था।खून से लथपथ।जम्बू ने उसे बाहं निकाला।
"ये कैसे हुआ सिल्ले? "जम्बू उसे सहारा देकर उठाते हुए बोला।
"अंडा देवता? "सिल्ले ने मुश्किल से आँखे खोली। "क्या तुम हो? "
"हां,ये मै ही हूं। "जम्बू ने उसे खड़ा किया।
"अब बताओ ये कैसे हुआ?"
"अंडा देवता। "बड़ी मुश्किल से बोल पा रहा था सिल्ले। "शनिश्चर वापस आ गया है, वो भी नई शक्तियों के साथ। "
जम्बू चौंका। "ओहह। "

''

जम्बू घर पहुंचा।
"बंटी? कहां हो तुम?"
कोई जवाब नहीं। सन्नाटा छाया रहा।
आखिर जम्बू हॉल में वापस पहुंचा। बंटी वही बैठा था।
"बंटी?तुम यहाँ क्या कर रहे हो? "जम्बू उसके पास आया।
बंटी ने जम्बू की तरफ देखा ,वो मुस्काया ,बेहद धीमे से।
जम्बू उसे स्कैन करता रहा, पर कोई नतीजा न निकला।
एकाएक बंटी उठा और एक तेज मुक्का जम्बू को जड़ दिया।जम्बू तो मशीन था, उस पर बंटी के वार का कोई असर नहीं हुआ। पर बंटी का हाथ लहूलुहान हो गया।
"ये तुम क्या कर रहे हो बंटी? "जम्बू ने उसका हाथ पकड़ लिया। पर बंटी भी मार्शल आर्ट एक्सपर्ट था,उसने एक जोरदार किक जम्बू के पैरों पर जमाई। जम्बू को तो न हिलना था तो वो हिला भी नहीं।
जम्बू उस पर हाथ नहीं उठा सकता था इसलिए वह उसे अपने से दूर करने की कोशिश में लग गया। बंटी ने वार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। वो लगातार वार करता रहा और जम्बू उससे बचता रहा।
जम्ब ू(मन में) , "बचना उपाय नहीं है।इसे बेहोश करना होगा। "
जम्बू के हाथ उसके शरीर से अलग हुए और एक वार बंटी के चेहरे पर हुआ। "उफ्फ" की तेज आवाज के साथ बंटी एक तरफ गिर गया।
जम्बू ने गहरी सांस ली और बंटी को उठाकर सोफे पर लिटाया।

''

कैप्टेन बकरा सिल्ले के साथ एक गुप्त स्थान पर छिपे हुए थे।
सिल्ले के जिस्म से बहे खून की भरपाई उसे खून चढ़ाकर की जा रही थी। दोनों के बीच अब तक सन्नाटा छाया में था।
तभी जम्बू ने वहाँ कदम रखा। बकरा अपनी जगह खड़ा हुआ, साथ ही सिल्ले भी।
बकरा, "सर,ये है कौन और किससे छिपा रहे हैं आप इसे?" उसका इशारा सिल्ले की तरफ था।
जम्बू के कुछ बोल पाने से पहले सिल्ले बोला , "अंडा देवता ,क्या आप मुझे जल्द से जल्द शनि ग्रह तक पहुंचने में मदद कर सकते हैंध् वहाँ की प्रजा बहुत मुश्किल में होगी इस वक़्त। न जाने शनिश्चर इस वक़्त कितना कहर ढा रहा होगा उन पर। "
जम्बू चुप रहा , फिर बोलाः– "शनिश्चर को पकड़ने के लिए हमे कहीं जाने की जरूरत नहीं। वो इस वक़्त पृथ्वी पर ही मौजूद है। "
बकरा और सिल्ले की आँखे फ़टी रह गई।
"आपको कैसे पता,अंडे देवता? "सिल्ले ने पूछा।
जम्बू ने ठंडी सांस ली।फिर बोलाः– "बंटी पर उसने माइंड कंट्रोल करने वाली गैस का इस्तेमाल किया था।मुझे खत्म करने के लिए। "
"क्या वो ऐसा कर सकता है कि माइंड कंट्रोल करने वाली गैस खुद ही बना ले? "बकरा बोला।
इस दौरान सिल्ले चुपचाप खड़ा उन्हें सुनता रहा।
जम्बू बकरा से मुखातिब हुआ। "वो एक सुपर कंप्यूटर है।बिलकुल मेरी तरह।सुपर कंप्यूटर के लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं। "
बकरा चुप हो गया।

जम्बू सिल्ले से बोला :– "तुम बताओ कि तुम उससे कैसे हार गए? "
सिल्ले ने मुँह बनाया।बोला :– "क्या बताऊँ अंडे देवता।मै तो अपने साथियों के साथ ग्रह का निरीक्षण ही कर रहा था कि अचानक वह सामने आ गया और मुझ पर हमला कर दिया। "
"तुम्हारे जिस्म से खून निकला तो और भी सिल्ले पैदा हुए होंगे। "बोला जम्बू।
"हां अंडे देवता।लेकिन ऐसा हुआ नही।क्योंकि वह ये बात जानता था कि और सिल्ले तभी पैदा होंगे जब मेरा खुन जमीन से टकरायेगा।इसलिये उसने ऐसा होने ही नहीं दिया। "सिल्ले एक एक शब्द पर जोर देकर बोला।
जम्बू सोच में पड़ गया।(मन में) "ऐसा कैसे कर पाया वो? "
बकरा और सिल्ले जम्बू को देखते रहे।
"खैर,"जम्बू बोला। "तुम दोनों को कुछ करना है आज। "
दोनों उसकी बातें गौर से सुनने लगे।

''

बंटी को होश आया तो उसने खुद को कुर्सी से बंधा पाया।उसके नथुने फूलने लगे।उसने अपनी पूरी ताकत लगाकर कुर्सी को झंझोड़ डाला।पर कोई फर्क न पड़ा।आखिर पूरी ताकत लगाकर वो कुर्सी सहित खड़ा हो गया।धीरे धीरे उसने सामने दिवार की तरफ खसकना शुरू किया।
आखिर कार वो दिवार के सामने जा खड़ा हुआ।बेहद तेजी से उसने अपने शरीर को घुमाया और कुर्सी दिवार से जा टकराई।
'धड़ाक' की आवाज के साथ लकड़ी की उस कुर्सी के कई टुकड़े हो गए।बंटी आजाद हो चूका था।
"तड़ तड़ तड़" की आवाज गूंजी।बंटी पलटा।सामने शनिश्चर खड़ा था।
(बंटी का दिमाग अब भी उसके कंट्रोल में था।)
"बहुत अच्छे बंटी। "शनिश्चर पास आता गया। "तुमने साबित कर दिया कि जम्बू के खिलाफ इस युद्ध में मैने सही मोहरा चुना है। "
बंटी शांत सा उसे देखता रहा।
शनिश्चर पास आया।उसने बंटी के कंधे पर हाथ रखा।
"अब तुम मुझे बताओगे कि जम्बू को खत्म करने के लिए उसके प्रोगाम में कौन सा वायरस डालना चाहिए। "
बंटी मुस्कुरा पड़ा।
''

सिल्ले और बकरा चुपचाप बंटी के पीछे बढ़ रहे थे।
बंटी,जो कि खुद किसी से भी अनभिज्ञ सा शनिश्चर को डॉ। भावा की लैब की तरफ लिए जा रहा था।

बकरा और सिल्ले के लिए वो उन दोनों से ज्यादा दुरी बनाये हुए थे लेकिन शनिश्चर नाम का वो सुपर कंप्यूटर सब जानता था कि पीछे कौन है।
आखिर बंटी और शनिश्चर लैब में पहुंचे।किसी उजड़े हुए घर से भी बदतर हालत में थी लैब इस वक़्त।
शनिश्चर की नजरें आसपास घूमने लगी।हर एक चीज़ का वो बारीकी से मुआयना करने लगा।
कुछ देर साफ़ सफाई करने के बाद बंटी एक कम्प्यूटर पर जा बैठा।उसकी उंगलियां की बोर्ड पर दौड़ने लगी।
बंटी बोला :– "मुझे इस बारे में जम्बू ने ही बताया था कि उसकी प्रोग्रामिंग के दौरान पापा ने उसे (**) एक वायरस से दूर रहने को कहा था। "(बंटी वायरस का नाम छिपा गया।)
"क्या तुम्हे वो वायरस याद है? "शनिश्चर ने पूछा।
बंटी ने सहमति में सिर हिलाया।
"तो बनाओ उसे।तब तक मै मेहमानों से निपट लूँ।" शनिश्चर बाहर को लपका।
''

बकरा और सिल्ले लैब के अंदर तो जा नही सकते थे।इसलिए उन दोनों के कान दरवाजे पर ही टिके थे।
जैसे ही दोनों ने सुना कि शनिश्चर वहाँ आ रहा है तो दोनों एक साथ वहां से हटे।पर भागने के लिए दूर दूर तक कोई जगह नहीं थी।बकरा ने अपनी गन तैयार की और सिल्ले ने अपनी फ़ौज।
खून के कतरे जमीन पर गिरते गए और सिल्ले पैदा होते चले गए।
दरवाजा एक झटके से टुटा और शनिश्चर ने बाहर कदम रखा।

"माय गॉड,ये तो बिलकुल जम्बू सर की माफिक दीखता है।" बकरा के मुँह से निकला।
शनिश्चर मुस्काया।कुछ समझ पाने से पहले ही उसकी आँखों से डिस्क निकल पड़ी।बकरा तेजी से आगे झलांग लगा गया और बाल बाल बचा।जबकि सिल्ले और उसके साथी अपनी जगह से नही हटे।सिल्ले खत्म होते गए और उनके खत्म होने के साथ साथ कई सिल्ले पैदा होते गए।
दूसरी तरफ बकरा के पास करने को ज्यादा कुछ नहीं था।इसलिय वो चुपके से अंदर दाखिल हो गया।
सिल्ले अब शनिश्चर पर भारी पडने लगा था।शन्शिचर भले ही उन्हें खत्म करता जा रहा था लेकिन कोई न कोई अचानक ही उस पर वार कर ही दिया करता।
नतीजा शनिश्चर का ध्यान बंट जाता और सिल्ले अपने हमले बढ़ाता जाता।शनिश्चर ने आखिर इस लड़ाई को खत्म करने का फैसला किया।शनिश्चर के मुंह से एक गैस निकली और वातावरण में फैलने लगी।
सिल्ले ने शुरू में उसपर ध्यान नहीं दिया और लड़ता रहा।पर अचानक ही सबका दम घुटने लगा।खांसते हुए वो सभी जमीन पर बैठने लगे और कुछ ही देर में बेहोश हो गए।
शनिश्चर मुस्काया।
अचानक ही वो चौंका।
"बकरा कहाँ है? "

''

शनिश्चर आंधी की तरह अंदर दाखिल हुआ।
अंदर का नजारा देखते ही उसे सुकून मिला।
बंटी ने बकरा को दबोच रखा था।(माइंड कंट्रोल गैस के कारण इस वक़्त उसे किसी की परवाह नही थी।)
बकरा उससे छूटने का प्रयत्न करते हुए बेहोश होने वाला था।
शनिश्चर के मुंह से गैस निकलकर वातावरण में फैलने लगी।
कुछ ही देर में बकरा अपने होश खो चुका था।

''

जम्बू शनि ग्रह से वापस लौट आया था।
अभी उसने शनिश्चर से लड़ने के लिए कुछ तैयारी कर रखी थी लेकिन वो तैयारी कब काम आएगी उसे पता न था।
अचानक उसके ट्रांसमीटर पर मैसेज आने लगा।
उसने लोकेशन स्कैन की और बाहर निकल गया।

लोकेशन शहर के बाहर पहाड़ी इलाके की थी।
जम्बू बिना रुकावट आराम से वहाँ तक पहुंच गया।किसी अनहोनी की आशंका उसे पहले ही होने लगी थी।जम्बू अंदर की तरफ बढ़ गया।धीरे धीरे बढ़ते कदम अचानक ठिठक गए।
सामने सिल्ले खड़ा था।
जम्बू :– "क्या बात है सिल्ले?क्या तुम्ही ने मुझे यहाँ बुलाया था? "
जम्बू की बात खत्म होते ही सिल्ले की सेना सिल्ले के पीछे आ खड़ी हुई।
"नही जम्बू.."
जम्बू आवाज की दिशा में पलटा।वो 'शनिश्चर' था।
"तुम्हे मैने बुलवाया है।" उसने बात खत्म की।
जम्बू तैयार था।तैयारी के साथ तो शनिश्चर भी था।
"अब मरने के लिए तैयार हो जाओ जम्बू। "पीछे बंटी भी तैयारी के साथ आया था।
जम्बू के नेत्र फैले। (मन में) "उम्मीद है बकरा इनके कब्जे में न आया हो। "
एकाएक बकरा भी अपने दोनों हाथों में गन थामे सामने आ खड़ा हुआ।जम्बू निराश नजर आने लगा।
अभी उसने अपनी चाल चली भी न थी कि सिल्ले का हाथ घुमा और जम्बू पर पड़ा।जम्बू कई फुट दूर जा गिरा।उसके पैरों पर खड़े होने से पहले ही बकरा की गन अपनी गोलियां उसका ध्यान भटकाने लगी।
जम्बू (मन में) "ये लोग अपने होश में नही है इसलिए मै इनपर जानलेवा हमले नही कर सकता। कुछ और सोचना होगा। "
सिल्ले उसे उठा उठा कर पटकने में लगे हुए थे और बकरा उसका ध्यान भटकाने में।
दूसरी तरफ बंटी ने अपना काम कर दिया था।

कुछ ही देर में जम्बू को अपने अंदर कुछ अजीब सा महसूस हुआ।उसके घुटने मुड़ने लगे।देखते ही देखते वो जमीन पर जा गिरा।उसके हाथ पैर जड़ हो गए।

शनिश्चर :– "मैने तुम्हारी बॉडी में एक वायरस डाल दिया है जम्बू।पिछली बार तुमने मेरा नाभि चक्र खत्म कर दिया था वरना अब तक पृथ्वी का नामोनिशान मिटा दिया होता मैने।('शनिश्चर कॉमिक') "

जम्बू अब बंटी के हाथ में चल रहे रिमोट की मर्जी से चलने लगा।

बंटी :– "जम्बू।मैने तुम्हारा फंक्शन बदल दिया है।भले ही तुम्हारे पास मेरे पापा का दिमाग हो पर अब तुम्हारी बॉडी इस रिमोट की मर्जी से चलेगी। "

जम्बू को अंदर लाया गया।

शनिश्चर उसके कंट्रोल पैनल में बदलाव कर रहा था ताकि आने वाले वक्त में उसका अपनी मर्जी से इस्तेमाल कर सके।

जम्बू इस वक़्त मशीनी जार में कैद था।जिसके बाहर निकल पाना उसके लिये नामुमकिन था।न ही कोई हिस्सा बाहर निकल सकता था।

जम्बू को चेक करते हुए अचानक शनिश्चर की नजर उसके बेल्ट पर पड़ी।वहाँ एक शीशी रखने की जगह थी।

न जाने शनिश्चर को क्या सुझा कि उसने वो शीशी निकाल ली।

जैसे ही उसने उसे खोला,वातावरण में तेज खुश्बू फैलती चली गई।साथ ही शनिश्चर का शरीर जड़ होता चला गया।

इधर जम्बू ने एक झटके से जार को खोला और बाहर आ गया।

शनिश्चर उसे हतप्रभ देखता रहा।

सिल्ले और बंटी वहाँ पहुंचे।पीछे पीछे बकरा भी कमरे में दाखिल हुआ।

"अरे वाह।आपने तो इसे अकेले ही संभाल लिया। "बकरा बोला।

शनिश्चर गुस्से में तमतमाता बोला। "अरे मुर्ख।मै शनिश्चर,यहाँ हूं।वो जम्बू है। "

सभी एक दूसरे की तरफ देखने लगे।फिर एकाएक हंसने लगे।

बकरा बोला ":– "मैने ये बात जम्बू सर से ही कही थी, न कि तुझसे शनिश्चर। "

शनिश्चर की आँखे फ़टी रह गई।

"तुम मेरी माइंड कंट्रोल गैस से कब आजाद हुए? "

जम्बू बोला :– "शनिश्चर..!सिर्फ बंटी ही तुम्हारी गैस के कंट्रोल में आया था।बाकि नही। "

शनिश्चर हतप्रभ सा देखता रहा।

"जब मै घर पहुंचा और बंटी ने मुझपर हमला किया, तभी मैने इसके शरीर को स्कैन कर लिया था।इसके शरीर में बह रही अजीब सी गैस को मैने तुरंत ही एनालाइज कर लिया था, पर मै वहाँ रुक नही सका,क्योंकि तुम आसपास ही हो सकते थे।बाद में मैने कैप्टेन बकरा की मदद से उसका एंटीडोट बनवाया और सिल्ले और बकरा ने यहाँ पहुंचकर अपना काम कर दिया। "

"और वो वायरस,जो बंटी ने तुम्हारे लिए बनाया था? "शनिश्चर आखिर बोला।

जम्बू हंसा।बोलाः– "ये वही वायरस था,जिससे पिछली बार तुम्हे गलाया था मैंने। "

"तो इस शीशी में कौन सा प्रोग्राम था,जिससे मै जड़ हो गया हूं। "शनिश्चर चीखा।

"आई यू एस "जम्बू ने कहा।और शनिश्चर चुप रह गया।

शनिश्चर और जम्बू अब आमने सामने थे।

जम्बू बोला :– "हो सकता है कि ये वायरस अब तुम पर काम न करे, क्योंकि अब तुमने खुद को अपग्रेड कर लिया है लेकिन अब हम तुम्हे शट डाउन करके किसी कबाड़ी में डाल देंगे। "

आगे जो कुछ हुआ शनिश्चर ने नही सोचा था।

उसे शट डाउन कर दिया गया और लैब में छिपा दिया गया।

''

३ साल बाद

एक कार पहाड़ी इलाको से गुजर रही थी कि अचानक झटके खाकर रुक गई।

एक लड़का और लड़की इस वक़्त उस पर सवार थे।

“क्या हुआ अमन? “लड़की ने पूछा।
लड़के ने गहरी सांस छोड़ी। “लगता है गाड़ी गर्म हो गई है। “
दोनों नीचे उतरे।
लड़की बोली :– “मुझे तो बहुत भूख लग रही है। “
लड़के ने सहमति जताई।और इधर उधर देखने लगा।
एकाएक वो चिल्लाया। “हे,वो देखो। “
लड़का लड़की दोनों चलते हुए लैब के करीब आ गए।
“मै तो कहती हूँ अमन।यहाँ से चलना चाहिए “
लड़का नही माना।वो अंदर बढ़ता रहा।
जल्द ही उन्हें एक कमरा नजर आने लगा।लडके ने धीरे से दरवाजा खोला।सामने एक जार नजर आ रहा था जिसके अंदर लेटा हुआ था 'शनिश्चर'..
लड़के ने जार को हाथ लगाया और शनिश्चर की आँखे खुल गई।
दोनों चीखकर बाहर भागे।
जार तोड़ता हुआ शनिश्चर बाहर आ गया।
“जम्बू..... “

मसीहा नागराज

कमल पटेल

क्या हालत हो गई दुनिया की आज,
मसीहा बनके आ जाओ नागराज।

विष फुंकार से मिटा दो भष्टाचार,
न हो गरीबो पर अत्याचार,
भूखे पेट सोये न कोई,
न हो किसी पर अनाचार।
खुशहाली की बारिश कर दो आज,
मसीहा बनके आ जाओ नागराज

निकाल कर कलाई से साँप,
बांध दो सभी को एकता के सूत्र में,
हिन्दू,मुस्लिम मिलकर रहे साथ,
सीमाये न हो दुनिया के मानचित्र में।
भाईचारे की धुन से सजा दो हर साज,
मसीहा बनके आ जाओ नागराज

अगर हो आज नागराज तो,
अमन चैन होगा चारो ओर,
कोई दुखी नहीं होगा,
खुशी छाई होगी चारो ओर।

मेरे इस सपने को पूरा कर दो आज,
मसीहा बनके आ जाओ नागराज

मौत के बाद

कहानी • अंकित निगम

हैलो! माइसेल्फ राहुल, नाम तो सुना ही होगा!! क्या कहा– नही सुना!! चलिए अब सुना देता हूँ, क्योंकि ये मेरी कहानी है।

इस दुनिया में लगभग ६० प्रतिशत लोगों को घोषित और ७५ प्रतिशत लोगों को अघोषित रूप से सुबह की नींद बहुत प्यारी होती है, उस पर भी यदि ये सुबह ठण्ड के मौसम की हो तो ये आंकड़ा संभवतः १०० प्रतिशत का या उससे कुछ ही कम का होता होगा। मुझे पूरा भरोसा है कि इन कुछ लोगों को भगवान ने नाईट शिफ्ट में बनाया होगा।
मैं भी इन्ही लोगों में से एक हूँ। मुझे सुबह की नींद अपनी प्रेमिका से भी ज्यादा प्यारी है। जब भी सुबह माँ मुझे उठाने के लिए आती हैं तो मैं भारत का विश्व प्रसिद्द, बस ५ मिनट और, वाला राग गुनगुनाता हूँ और तकिया में सर घुसाकर फिर सो जाता हूँ, और इन ५ मिनटों की अवधी कभी भी आधे घंटे से कम नहीं होती है।
आज भी एक ऐसी ही सुबह थी और मैं रोज़ की तरह निद्रा रुपी अपनी प्रेमिका के आलिंगन में समाया हुआ था।
सुबह के शायद ७ बज चुके थे या उससे भी ज्यादा क्योंकि माँ के शब्द "उठो लाल अब आँखें खोलो" से "उठ जा कुम्भकर्ण की औलाद" में परिवर्तित हो चुके थे और इससे पहले की ये क्रमिक परिवर्तन थप्पड़ों की मार तक पहुँचता, मैंने अपनी प्रेमिका के आलिंगन को ना चाहते हुए भी त्यागने का निर्णय लिया। बिस्तर से उठते हुए मैंने अधखुली आँखों से पहले खिड़की के बाहर झाँका जहाँ घने कोहरे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखा, फिर सामने की दीवार पर टंगी घड़ी को देखा जो ७रू२५ बजा रही थी।
"अरे बाप रे साढ़े सात होने वाले हैं, क्या मम्मी थोड़ा और पहले ये वाला रूप दिखा देती तो मैं जरा जल्दी उठ जाता।"
मैंने अपने कमरे से आँगन की तरफ जाते हुए बोला।
"कब से तो जगा रही हूँ, पर तेरा ५ मिनट – ५ मिनट ख़त्म हो तब ना।"
माँ ने भी रसोई में नाश्ता बनाते हुए बड़बड़ाया। अब मैं क्या कहता क्योंकि मुझे भी पता है कि गलती तो मेरी ही है।

वैसे जब कभी भी समय कम होता है मेरी उम्र के लगभग सभी बन्दों की गति आश्चर्यजनक रूप से बढ़ जाती है। मैंने भी अपनी सम्पूर्ण गति का प्रयोग करते हुए प्रातः की समस्त दैनिक गतिविधियाँ मात्र २५ मिनट में पूरी करीं और अब चाय को पानी की तरह पीते हुए अपने बॉक्स की जाँच कर रहा हूँ ताकि कुछ छूट ना जाए। ओह मैं तो बताना ही भूल गया कि आज मुझे कर्मचारी चयन आयोग ";ब्द्ध की परीक्षा देने जाना है और अपने आलस के कारण मैं पहले से ही बहुत लेट हो चुका हूँ।

"आज ठंड कुछ ज्यादा ही है, कपड़े ठीक से पहन लेना और ऊपर से जैकेट और मफ़लर भी डाल लेना।" माँ की एक और आवाज़ या कहूँ आदेश।
"हम्म"
मैंने जवाब दिया और फिर अलमारी से जैकेट और मफ़लर निकालने लगा। वैसे आज सच में ठंड काफी ज्यादा है। मैंने पहले से ही काफी कपड़े पहने हुए हैं, फुल बॉडी इनर, मोटी सी जीन्स, शर्ट, हाफ स्वेटर और अब उस पर जैकेट और मफ़लर भी। चाय ख़त्म करते ही मैंने एक बार फिर घड़ी को देखा जो मुझे मिल्खा सिंह से भी तेज़ भागती हुई प्रतीत हुई, छोटी

सुई ८ पर और बड़ी १२ की लकीर को पार करके जैसे दौड़ जितने का उल्लास मना रही थी। मैंने घर के अहाते में रखी अपनी मोटरसाइकिल बाहर निकाली और जाने की तैयारी करने लगा।

"बहुत घना कोहरा है, आराम से ड्राइव करना समझे।" माँ ने तो बोल दिया पर मैं अब इतना लेट हो चुका हूँ कि अगर आराम से ड्राइव किया तो पहुंच चुका सेंटर, कोई बगल में थोड़ी धरा है।

गलगोटिया कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी तकरीबन ६० किलोमीटर की दूरी पर है रिठाला से। सामान्य स्थिति में ही वहाँ पहुँचने में लगभग डेढ़ घंटे का समय लगता है, आज तो परीक्षा का दिन है और मेरे पास मात्र एक घंटे का समय है।

इस वक़्त मेरे दिमाग में बस एक ही बात गूँज रही है कि अगर मैं ६रू१५ से पहले नहीं पहुंचा तो मुझे केंद्र में प्रवेश नहीं मिलेगा। आज की इस परीक्षा के लिए मैं ६ महीनों से जी तोड़ मेहनत कर रहा हूँ और मात्र १५ मिनट की नींद के कारण इसे छोड़ना नहीं चाहता। मुझे पता है कि इस बार मेरा चयन पक्का है, अगर मैं समय से पहुँच पाया तो???

सुबह के साढ़े आठ बज रहे हैं पर अभी भी कोहरे की चादर ज़रा सा कम नही हुई है। ऐसा लगता है मानो चार कदम की दूरी पर खड़ा इंसान भी दिखाई नहीं देगा। लेकिन मुझे तो देर हो रही है, आखिरकार मैंने घने कोहरे के बाद भी अपनी मोटरसाइकिल की गति को बढ़ाने का निर्णय लिया और कुछ ही पलों बाद मेरी बाइक के स्पीडो मीटर की सुई ७० किमी प्रति घंटा की गति प्रदर्शित कर रही थी। मुझे लगता है कि शायद पौने नौ बज रहे होंगे जब मैंने मयूर विहार से नोएडा एक्सप्रेस वे पर टर्न लिया और अब इस एक्सप्रेस वे को मुझे सिर्फ आधे घण्टे में पार करना था। मुझे लगातार अगल बगल से गाड़ियों के गुजरने का आभास हो रहा था लेकिन कोहरा अब भी इतना घना था कि कोई भी गाड़ी नज़र नहीं आ रही थी।

मैं निश्चिंत था क्योंकि सेंटर अब ज्यादा दूर नहीं था कि अचानक मेरी बाइक किसी चीज़ से टकराई, शायद कोई लकड़ी जैसी चीज़ जिसने मेरी बाइक के अगले पहिये को बिल्कुल जाम कर दिया। गाड़ी तो एक झटके से गिर गई पर मैं न्यूटन के जड़त्व के नियम से ७० किमी प्रति घंटे की रफ़्तार से लगभग १०० मीटर दूर तक लुढ़कता चला गया और उसके बाद.... उसके बाद मैंने सिर्फ अपनी आँखों के आगे छाए घने कोहरे की आड़ में धुंधले से दिखते दृश्यों को और अधिक धुंधलाते हुए महसूस किया और फिर अँधेरा... गहरा काला अँधेरा छा गया।

ना जाने कितनी देर बाद मेरी आँखें खुलीं। मेरे सामने जो दृश्य थे वो बिल्कुल ही अलग से थे सफ़ेद धुंए के साये में हलकी सी रौशनी और उसमें से निकलकर एक युवती मेरे सामने आ खड़ी हुई। बहुत ही गोरी थी वो और उसने परियों जैसा लंबा सा सफ़ेद गाउन पहन हुआ था। वो बस मुझे देखे जा रही थी। थोड़ी देर बाद कुछ और लोग भी आ गए। सभी दूध से भी ज्यादा सफ़ेद रंग के थे और आपस में ना जाने क्या बातें कर रहे थे। मुझे उनकी बात का एक भी अक्षर समझ नहीं आ रहा था। फिर मैंने महसूस किया कि मैंने जो हेलमेट पहना था वो मेरे सर पर नहीं है, मैंने नज़रें घुमाकर देखा फिर भी वो नहीं दिखा। मुझे लगने लगा था की शायद मैं मर चुका हूँ और इस वक़्त स्वर्ग में हूँ, मैं अभी सोंच ही रहा था कि उस परी जैसी दिखने वाली लड़की ने मुझसे पूँछा

" एस्टॉस बीएन ? एन अल्गुन डॉनो ?

मुझे उसके शब्द सुनाई तो दिए लेकिन उनके अर्थ मुझे नहीं पता थे। मैं अभी सोंच ही रहा था जब मैंने एक युवक को उससे बात करते हुए सुना –

“गोलपीएडो एन लॉ कबेज़ा, प्रोबेबलेमेंटे लॉ मेमोरिआ से हॉ इडो”

“क्रेओ क्यू सी”

दिमाग पर बहुत ज़ोर देने के बाद भी मुझे उनकी बात समझ नही आई। अब मुझे यकीन हो गया था कि उस एक्सीडेंट की वजह से मेरी मौत हो चुकी है और स्वर्ग या नर्क जहाँ भी मैं हूँ वहां की भाषा मुझे नहीं आती है। कुछ देर में उस युवक ने मुझे एक लाल रंग की चीज़ दी और इशारे से पीने को कहा। कोई औषधि थी शायद, बहुत कड़वा स्वाद था, मैंने पीने से मना करना चाहा पर उसकी घूरती आँखें देखकर एक ही घूंट में पी गया। ऐसा लगा मानो पूरा गला जल गया हो। ये शायद मेरे कर्मों की सज़ा की शुरुआत थी। मुझे माँ की बहुत याद आ रही थी, सोंच रहा था कि काश मैं आज बिस्तर से जल्दी उठ गया होता तो दुनिया से ना उठा होता।

मैं अब पूरी तरह से आश्वस्त था की ये मरने के बाद की दुनिया है पर तभी मेरे कानों में एक आवाज़ गूँजी –
“क्यों रे छोरे इब ठीक सै? इत्ते कोहरे मे तूफाण बणने की के जरुरत आन पड़ी थी तन्ने?

पिछले आधे घंटे में ये वो पहले शब्द थे जिनके अर्थ मुझे मालूम थे। मैंने आवाज़ की दिशा में देखा तो एक बड़ी बड़ी मूँछों वाला सांवला सा आदमी चेक वाली नीली रंग की लुंगी और सफ़ेद रंग का कुर्ता पहने खड़ा था। ये शायद नर्क का हिंदी भाषी कर्मचारी था, हालांकि देखने में वो स्वयं ही यमदूत लग रहा था। ये यहाँ पर भी लेट आया, भारतीयों की ये आदत मरने के बाद भी नहीं बदलती क्या ? उसकी अगली आवाज़ ने मुझे सोंच से बाहर लाया –

“सुणाई नहीं दे रहा के तन्ने?

“अं ... नहीं... मतलब हाँ ... सुनाई दे रहा है।”

उसके दोबारा पूँछने पर मैंने बोला। मैं सोंच रहा था की भगवान ने इस काम के लिए इस हरयाणवी ताऊ को ही क्यूँ चुना, कम से कम मरने के बाद बन्दों को डराना तो नहीं चाहिए। फिर मैंने डरते डरते उससे पूँछा –
“ये नर्क है या स्वर्ग?

“नर्क!! स्वर्ग!! .... ओये तू मरा को णी छोरे, अभी जिन्दा सै। हा हा हा”

इतना कहकर वो हंसने लगा। उसने बोला तो मुझे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। मुझे लग ही नहीं रहा था कि मैं जिन्दा हूँ। तभी मैंने देखा कि वहां मौजूद सभी लोग ज़ोर ज़ोर से हंसने लगे, वो ताऊ तो पहले से ही पेट पकड़कर हंस रहा था। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ सा खड़ा था। तभी मैंने ध्यान दिया कि उस परी और उसके साथियों की बातें अभी भी मेरी समझ में नहीं आ रही हैं।

“तू जिन्दा है भाई, और ये सब स्पेनिश पर्यटक हैं, इन्हें हिंदी और इंग्लिश दोनों ही नहीं आती और तुम्हे स्पेनिश, इसलिए इनकी बात तुम समझ नहीं पाए।”
फिर से ये जाने पहचाने शब्द मेरे कानों में पड़े। इस बार इन्हें बोलने वाला एक सभ्य सा दिखने वाला व्यक्ति था। मैंने उससे पूँछा –
“आप ... कौन ?
“मैं इनका गाइड, सुरेश”
उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया और मैंने भी हाथ बढ़ाकर मिला लिया। मैं शायद उसे छूकर उसके

वास्तविकता में होने की पुष्टि करना चाहता था। हालांकि मुझे हाथ बढ़ाने में काफी तकलीफ हुई थी। फिर उसने बताया की उनकी बस यहाँ ख़राब हो गयी थी और घने कोहरे के कारण ड्राईवर ने बस के चारों तरफ पेड़ की डालें फैला दी थीं ताकि कोई बस से न टकरा जाए। उसने बताया कि वो हरयाणवी ताऊ इनके ड्राईवर हैं। मेरी बाइक उन्ही में से एक डाल से टकराई थी और मैं उछलकर दूर जा गिरा, इतने ज्यादा कपडे और हेलमेट पहने होने की वजह से मुझे कोई घातक चोट नहीं लगी बस थोड़ा शौक लगा था इसीलिए एक स्पेनिश ने मुझे ब्रांडी पिलाई थी। ओह... यक्... वो कड़वा ड्रिंक ब्रांडी थी।

साढ़े दस बज गए थे और कोहरा भी बहुत हल्का हो गया था। मैंने देखा कि मेरी जीन्स और जैकेट जगह जगह से फैट गई थी। अब मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ, जिन्दा होने की ख़ुशी मनाऊं या परीक्षा छूटने का शोक। खैर मैंने घर लौटने का फैसला किया और सबको धन्यवाद दिया। ड्राईवर ताऊ ने मुझे मेरी हैलमेट पकड़ाई जिसका शीशा टूट गया था और जगह जगह पर खंरोच भी थी। मैंने सबसे विदा ली और वापस चल दिया।

इन कुछ घंटों ने मुझे मौत के बाद की जिंदगी का एहसास करा दिया था। घर लौटते वक़्त मेरी बाइक की गति मात्र ४० किमी प्रति घण्टा थी। बुराड़ी के पास एक बोर्ड पर मेरी नज़र पड़ी जिसमे लिखा था –

"दुर्घटना से देर भली।"

इस वाक्य को पढ़ कर मेरे अंतर्मन से आवाज़ आई –

"ना दुर्घटना भली, ना देर, ना भला आलस का फेर।"

अगर मैंने अपने आलस में सुबह का समय न गंवाया होता तो आज का दिन कुछ और होता।

समाप्त ।।



हमारे नायकों के प्रेरणास्रोत १

अमर शहीद चंद्रशेखर आज़ाद

मनीष अंकित

दोस्तों जैसा कि हम सब जानते हैं कॉप यानि भारतीय कॉमिक्स के प्रति हमारे जूनून को समर्पित है और हम सब में इस जूनून को जगाया है हमारी कॉमिक्स के निराले नायकों सुपरहीरोज ने। इसलिए कॉप की मैगज़ीन के पहले अंक में यदि सुपरहीरोज की बात ना हो तो कहीं कुछ कमी रह जाएगी। लेकिन हम बात करेंगे असली भारतीय सुपरहीरोज की और उनसे प्रेरित हमारे कॉमिक्स जगत के नायकों की।

हम सभी पर अपने नाम को सार्थक करने दबाव हमेशा ही होता है। अभी हाल ही में किसी प्रदेश के मुख्यमंत्री जी ने कहा था कि उन्होंने अपना नाम भी स्वयं ही रखा हैं ऐसा उन्होंने किया है या नहीं हम इसकी विवेचना नहीं करेंगे लेकिन यदि हम अपने नाम का चयन स्वयं करते हैं तो उसे सार्थक करने की जिम्मेदारी और भी अधिक हो जाती है। हालांकि वो कम ही होते हैं जो ऐसा कर पाते हैं। आज हम एक ऐसे नायक का आशीष लेंगे जिन्होंने ना सिर्फ स्वयं अपना नाम रखा अपितु उसे अक्षरशः सार्थक भी किया हैं श्री चंद्रशेखर आज़ाद।

महानायक की पहचान उसकी शक्ति से नही बल्कि उसके साहस से होती है। आज़ाद जी ने अपने साहस का परिचय बहुत कम उम्र में ही दे दिया था। जिस उम्र में हम सब खेल के मजे ले रहे होते हैं उस उम्र में उन्होने देश के लिए कोड़े खाये थे। पहली बार जब चंद्र शेखर दुनिया के सामने आये तब उनकी आयु मात्र १५ वर्ष थी और उन्हें सबके सामने कोड़े लगाने की सजा मिली थी। हर कोड़े की मार पर उन्होंने भारत माता की जय का नारा लगाया। उस दिन चन्द्र शेखर नाम का वह बालक सारी दुनिया के लिए आज़ाद बन गया। उनके जीवन की इस घटना को पढकर ही शायद डोगा ने दर्द सहकर उफ़ न करने का प्रण किया होगा। उनका सम्पूर्ण जीवनए बाल्यकाल की इस घटना से प्रेरित रहा। उन्ही की तरह डोगा का जीवन भी उसके बालपन में हुई घटनाओं का परिणाम है। जिस तरह मजिस्ट्रेट के कोड़ों ने देश को एक निडर सिपाही दिया उसी तरह डाकू हलकान सिंह की यातनाओं ने मुम्बई को रात का रक्षक दिया। एक ने बाहरी ताकतों के खिलाफ हथियार उठाये तो एक ने देश के भीतर के गद्दारों से लड़ने के लिए। यदि इन दोनों नायकों के जीवन की घटनाओं की और इनकी कार्यशैली की विवेचना की जाए तो हम पाएंगे की इनमें बहुत समानता है। दोनों ही अपने समय के भ्रष्ट तंत्र से आहत थे। एक के समय में दुश्मन बाहर से आकर देश को खोखला कर रहा थाए तो दूसरा देश को अंदर से दीमक की तरह चाटने वाले दुश्मनों से लड़ने की बात करता है। जिस प्रकार आज़ाद जी ने कभी भी निरंकुश अंग्रेजों को मारने से कोई गुरेज़ नहीं किया उसी प्रकार डोगा भी आतंक की राह पर चलने वालों की हत्या करने से पहले नहीं सोंचता। संभवतः आज़ाद जी के जीवन से

ही उसने समस्या को जड़ से उखाड़ने का सन्देश प्राप्त किया होगा।

परिस्थितियों के आगे न झुकना ही सच्चे महानायक की पहचान होती है। आज़ाद जी ने उस समय अपने कार्यों से समाज को यही करके दिखाया। वो अपने जीवन में न तो कभी रुके और न ही उन्होंने कभी झुकना स्वीकार किया। सदैव आज़ादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार रहे और उन्होंने किया भी। क्रांति के पथ को प्रशस्त करने के लिए जब हथियारों की आवश्यकता पड़ी तो उन्होंने काकोरी में ६ अगस्त १९२५ को अपने साथियों संग सरकारी खजाने से भरी ट्रेन लूटी, लाला जी की मौत का बदला लेने का समय आया तो साथियों संग सांडर्स को मारने का भी फैसला लिया। डोगा ने भी आज़ाद जी से प्रेरित होकर ही समाज में हो रहे अत्याचार के खिलाफ हथियार उठाया होगा। वो भी दुश्मनों के खात्मे के लिए उन्ही के हथियारों का इस्तेमाल करने से पीछे नहीं हटता।

दोनों के बीच में एक और बड़ी समानता है प्रशाशन से उनका बैर। जिस तरह से आज़ाद जी अंग्रेजी हुकूमत के लिए एक मुजरिम थे उसी तरह से डोगा आज की कानून व्यवस्था का अपराधी है। इस तथ्य के साथ एक और बड़ी समानता ये है कि दोनों के ही समय की पुलिस के लिए उन्हें पकड़ पाना असंभव से भी ज्यादा कठिन रहा। ना तो अंग्रेज कभी आज़ाद जी को पकड़ सके और ना ही मुम्बई पुलिस डोगा को। आजाद जी ने तो अपनी सदैव आज़ाद रहने की प्रतिज्ञा के लिए स्वयं ही अपना बलिदान दे दिया। अंग्रेजी हुकुमत में उनके नाम का जो खौफ था वो किसी और नाम से नही था। इसका उदाहरण इस बात से मिलता है की २७ फरवरी १९३१ को अल्फ्रेड पार्क में जब उन्होंने ने स्वयं को गोली मार ली थीए तब भी पुलिस उनके मृत शरीर के पास जाने से डर रही थी।

ऐसा ही ख़ौफ़ डोगा का भी है अपराधियों के दिलों में। वो भी आज़ाद जी के दिखाए मार्ग पर ही तो चलता है। सरकार और अपराधियो से हथियार लूट कर उनका सही इस्तेमाल करता है। कभी अन्याय के आगे नही झुकता। समस्या कितनी भी गंभीर या बड़ी क्यों न हो वो बिना लडे हार नही मानता। वो हिंसा भी करता है पर सिर्फ उनके साथ जो वही भाषा समझते है। डोगा के लिए जहाँ एक अपराधी की जान का कोई मूल्य नही है वहीँ पर एक मासूम की तरफ बढ़ती मौत को वो अपने सीने पर लेने का माद्दा रखता है। आज़ाद जी की भी मूल बात यही थी। एक भारतीय की जान उनके लिए भी महत्वपूर्ण थी। एक किस्सा याद आता है जब धन आपूर्ति हेतु क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों के वफ़ादार अमीरों के घरों को लूटने का प्लान बनाया तब एक लूट एक दौरान घर की एक महिला ने आज़ाद जी का हाथ पकड़ कर उनकी पिस्तौल छीन लीए, आज़ाद जीए जो कि शारीरिक रूप से बहुत बलिष्ठ थे, ने उस औरत से पिस्तौल वापस छीनने का प्रयास तक ना किया। उस समय यदि बिस्मिल जी वहां ना आते तो शायद वो औरत आज़ाद जी को पकड़वा भी देती पर उन्होंने उसे क्षति पहुँचाने का कोई प्रयास नहीं किया। इस घटना के बाद सभी ने भारतीयों के घरों को लूटने की योजना भी त्याग दी।

आजाद जी ने राम प्रसाद बिस्मिल, सचिन्द्रनाथ सान्याल, भगत सिंह, अशफाक उल्ला खान और कई अन्य क्रांतिकारियों के साथ मिलकर भारत की आज़ादी के लिए हर संभव प्रयास किए।

भले ही आजादी दिलाने के लिए उनके यह प्रयास सफल नहीं हो सके पर उनके इन प्रयासों को कभी भुलाया नही जा सकता। किसी भी बड़े जहाज के निर्माण में हर एक कील महत्वपूर्ण होती है। एक बात जो हमेशा कचोटती है कि आजादी के बाद उन्हें कभी वो सम्मान नही मिला जिसके वो हक़दार थे। हमारे लिए इससे ज्यादा शर्मनाक और क्या हो सकता है की उन्हें किताबो में आतंकवादी तक बताया गया है। उनके नाम पर सिर्फ दो चार स्मारक बना दिए गए और हर वर्ष किसी एक दिन कोई उन पर माल्यार्पण कर देता है। ये हम सबको सोंचना चाहिए कि क्या आज़ादी के इस महानायक के लिए सिर्फ इतना किया जाना काफी है ?

ये सत्य है कि उन्होंने जो किया वो ना तो किसी प्रशंसा के लिए किया और ना ही किसी उपेक्षा से उन्हें कोई फर्क पड़ने वाला हैं किन्तु ये हम सबका दायित्व है कि हम इस स्वतंत्र हवा में ली गई प्रत्येक साँस के लिए हर एक शहीद के प्रति कृतज्ञता का भाव रखें। इसके बाद भी हम चाहे कितनी ही कोशिश क्यों ना कर लें पर उनके बलिदान को कभी चुकता नही कर पाएंगे।

समाप्त!


बेटी बचाओ
कथा - ब्रम्हा पटेल चित्र - हरेन्द्र सैनी
शब्दांकन - निशान्त मौर्य
मुबारक हो रघु। घर मे लक्ष्मी आई है तुमको बेटी हुई है।
साली तुझे कहा था ना की इस बार मुझे बेटी नही बेटा चाहिए
बच्चे तो ऊपर वाला देता है इसमे भला मैं क्या कर सकती हूँ ?


साली एक तो गलती करती है और मुझसे जुबान लड़ाती है।
बेटियाँ हमारे सर पे बोझ है। पहले इसे पढ़ाओ लिखाओ फिर उसकी शादी के खर्चा करो। और साथ मे दहेज दो।


नही मेरे पापा को छोड़ दो, प्लीज उन्हें माफ़ कर दो
देख रघु, जिन बेटियाँ से तू इतनी नफरत करता है वो तुझे बचाने के लिए मौत के सामने आने को भी तैयार हैं... अगर अब भी तेरी गैरत ना जागी तो धिक्कार है तेरे होने पर, अरे बेटियाँ तो नसीब वालों को मिलती हैं, देख मुह उठाकर आज तो बेटियों ने पुरे देश की इज़्ज़त रखी है


अरे अगर मारना है तो बेटियों के खिलाफ पनपने वाली सोंच को मार, उनपर उठने वाले हर एक हाथ को मार, उनको आगे बढ़ने से रोकने वाले समाज को मार, अरे इन मासूमों को मारकर क्या पायेगा, इन्हें पढ़ा लिखा और फिर देखना ये तेरे परिवार का ख्याल लड़कों से भी बेहतर रख कर दिखाएंगी।
सोच अगर तेरी तरह हर कोई लड़का चाहेगा ..तो इस दुनिया से लड़कियो का नामोनिशान मिट जायेगा...लड़की । औरत बनती है जिससे तूने शादी किया। लड़की माँ बहन बेटी बनती है जिसे तु प्यार करता है। तूने जब अपनी बीवी से शादी की। तो उसने सब कुछ छोड़ के तेरी सेवा की। तेरे हर जुल्म सहे। उसने पूरा जीवन तुझ पर न्योछावर कर दिया...! औलाद ओलाद होती है रघु चाहे बेटी हो या बेटा.... ने आज हर क्षेत्र मे देश का नाम रोशन किया। चाहे पढ़ाई हो या कोई क्षेत्र...कही भी ...बेटियां कहि भी बेटो से कम नही है । आज अगर तेरी बेटी ने मुझे नही रोका होता ..तो तुझ जैसे नीच आदमी का सीना छलनी करते हुए। मुझे कोई फर्क नही पड़ता..लेकिन आज तेरी बेटी ने तुझे बचा लिया....ये बेटियां भगवान का अनमोल तोहफा है । रघु। अगर तुम इसे सम्भल के रखोगे...तो यही लड़कियां समाज मे तुम्हारा सर गर्व से ऊंचा कर देगी..!
माफ़ कर दो शक्ति.. अब मैं अपनी बेटियों को एक अच्छी परवरिश दूंगा ताकि वो अपने पैरों पर खड़ी हो सकें।

वी विल बैक विद अ बैंग : पंकज नाइक



ऋषभ आदर्श

आयुमी प्रोडक्शन्स एक ऐसा नाम है जो नया जरूर है पर आज के दौर का हर कॉमिक फैन इससे परिचित अवश्य है। कम समय में ही आयुमी ने फैंस के बीच एक अलग स्थान बना लिया है। काल ऐसा चरित्र है जो तेजी से लोकप्रिय हुआ है। आइये आपको उस शख्स से मिलवाते है। जिनकी वजह से **काल** सम्भव हुआ । जी हां हम बात कर रहे हैं पंकज नाइक जी की। ऋषभ आदर्श जी ने पंकज जी का एक साक्षात्कार लिया। प्रस्तुत है उनसे हुई बातचीत

ऋषभ : *आप अपने बचपन में कॉमिक्स पढ़ने को कैसे याद करते हैं? कॉमिक्स माध्यम में आने के लिए कैसे प्रेरित हुए?*

पंकज जी : जो दो पहली कॉमिक्स मैंने पढीं वो थी एक नागराज की "खूनी खोज" और एक "World's Finest issue" जो मुझे मेरे Uncle ने तोहफ़े में दी थी जब मै चौथी कक्षा में था। उन कॉमिक्सों को पढ़ने के बाद मेरा कॉमिक्स इकट्ठा करने का सफर शुरू हो गया। मुझे सबसे ज्यादा, कॉमिक्स के चित्र और कहानी कहने के तरीके ने विस्मृत कर दिया। और यही वो समय था जब मैंने चित्र बनाने शुरू किये और बनाता चला गया।

ऋषभ : *कौन से लेखक और आर्टिस्ट्स थे जिनकी ओर* as a fan *आप खिंचते गए?*

पंकज सर : मेरे पसंदीदा लेखक हैं Jeph Loeb, Mark waid, Alan Moore, Geoff Johns etc सूची समाप्त नहीं हो सकती। और कलाकारों में Jim Lee मेरे favorite हैं, शुरू से ही! उनके बार Marc Sivestri और Todd Mcfarlane भारतीय कलाकारों धीरज वर्मा सर और मनु सर मेरे प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। मेरे साथी कलाकार अभिषेक सिंह, मुकेश सिंह, सौमिन पटेल और अभिषेक मालसुनि के भी कार्य मुझे प्रभावित करते हैं, मेरे ख्याल से ये भारत की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाये हैं।

ऋषभ : *आपने भी कॉमिक्स जुनूनियत जो कहते हैं जैसे, कॉमिक्स की दुकान के चक्कर काटना, सम्पादकों को पत्र लिखना, या fan fictions बनाना इत्यादि में हिस्सा लिया था?*

पंकज जी : अरे!! बचपन में बहुत किया मैंने...बहुत मतलब बहुत ज्यादा! मैं सम्पादकों को लम्बे लम्बे पत्र लिखा करता था अपने opinions के साथ, हर weekend पे कॉमिक्स वाली दूकान के चक्कर लग ही जाते थे की कहीं शायद कोई नयी कॉमिक्स आई हो!! Fan Fiction के नाम पे मेरे पास अभी तक मेरे पुराने कार्य हैं जिन्हें देख भर लेने से ही मन प्रसन्नता से भर उठता है!

ऋषभ : *कौन से कॉमिक्स किरदार थे जिनकी कॉमिक्स आप बनाना चाहते थे? यहाँ भारत में RAJ COMICS को ही जब कॉमिक्स माना जाता है, आप RC की तरफ नहीं आकर्षित हुए, कहानी लिखने या आर्ट बनाने के लिए?*

पंकज जी : As a kid, मैं सुपरमैन और He Man की बुक्स बनाना चाहता था जो की अबतक चाहता हूँ लेकिन मैं जब बड़ा हो रहा था मैं भारतीय माइथोलॉजी की तरफ मेरा झुकाव हो रहा था और "काल" इसी का नतीज़ा है!! नागराज, ध्रुव, डोगा और बांकेलाल को पढ़ना हमेशा से ही रोमांचक रहा है। मैं भोकाल और डोगा पे काम कर चुका हूँ लेकिन किसी दिन मैं नागराज की कॉमिक्स बनाना चाहूँगा :)

ऋषभ : *आपने अग्रणी companies में बतौर 3D Character designer काम किया है, तो उन कार्यों से आपको ज़रूर बहुत कुछ सीखने को मिला होगा जब आप स्वयं के characters बना रहे होंगे! है न?*

पंकज जी : बेशक! character और story development के काम ने मेरी visualisation skills को बढ़ाया और साथ ही मेरे दिमाग में नए कॉन्सेप्ट्स ने भी जन्म लिया! इस कार्य ने मुझे सारी दिशाओं में सोचने का अवसर प्रदान किया, और हमारे ध्वजवाहक चरित्र "काल" की रचना में यह practice और अनुभव बहुत काम आया!!

ऋषभ : *हमें अपने designed character "काल" के बारे में बताइये! कैसे शुरुआत हुई और कैसे ये बनकर साक्षात सामने खड़ा हुआ?*

पंकज जी: पिछले १० वर्षों से मेरे दिमाग में नर्क से सम्बंधित चरित्र का idea था जिसकी theme ही dark हो, पर तब वो सिर्फ एक idea भर था, और आज printed books की शक्ल में वो मूर्त रूप अख़्तियार कर चुका है!! जब मैंने animation industry छोड़ी, काल कैसा होगा और उसकी कॉमिक्स कैसी होगी, वो मुझे साफ़ था! फिर भी हमने न जाने कितने sketches बनाये कितने पन्ने यूँ हीं लिख डाले research की, कि काल की दुनिया कैसी होगी...और जो पहला चरित्र मैंने बनाया वो काल नहीं था, ये था "यम", मृत्यु के देवता...उसके बाद "Garuda" क्योंकि कहानी का आधार ही नर्क था!!



फिर दोनों देवताओं के designs और concepts finalize होने के बाद; मैंने काल शुरू किया! मेरे पास सौ से भी ज्यादा रफ़ designs थे और समस्या थी की उनमे से एक भी मुझे पसन्द नहीं था!! मुझे 5 से 6 महीने लगे काल के look को वैसा बनाने में जैसा मैं चाहता था...और सबने इसे पसन्द भी किया, शायद इसलिए क्योंकि ये simple था।।

लगभग ढाई साल होने को हैं जब से आयुमि प्रोडक्शंस ने शुरुआत की है और एक के बाद एक २ काल की कॉमिक्स published की हैं, "KAAL# & Reap what you sow" जिसे काफी बढ़िया response मिला पर इतना ही बढ़िया reception दूसरी कॉमिक्स "ITEM DHAMAKA& Godsmack part1" को भी मिला।।

हमारी दोनों कॉमिक्स के आर्ट्स और स्टोरीज़ दोनो ने ही प्रशन्सा पायी, यहाँ तक की Comic Con India Awards esa Best Art & Best Color के लिए nominate भी हुए!! सन् २०१५ में KAAL # & Aarambh को मिले response से हम काफी उत्साहित हैं!! काल की तीसरी कॉमिक्स और ITEM DHAMAKA के finale आश्चर्यजनक चरित्र कहानी और किरदारों के साथ लाने के लिए कटिबद्ध हैं।

ऋषभ : *आप अपने कॉमिक्स को दूसरों से किस तरह भिन्न पाते हैं?*

पंकज जी : हर कोई बेहतरीन काम कर रहा है। मेरे ख़याल से 2 तरह के कॉमिक्स बाजार में हैं

1. पाठकों के लिए।
2. रचनाकारों की ओर से।

हम वही प्रकाशित कर रहे हैं जो हमें पसंद है और चाहते हैं की पाठक पढ़ें, ये दूसरों से कैसे अलग है ये तो नहीं पता लेकिन हमारा फोकस भारतीय माइथोलॉजी में है, जिससे हम अपनी लगभग भुला दिए जा चुके इतिहास को पुनर्जीवित कर सकें...जैसा की काल की कहानी में गरुड़ पुराण का वर्णन है।

ऋषभ : *भारतीय कॉमिक्स इंडस्ट्री के downfall पे आपके क्या विचार हैं?*

पंकज जी : ये बड़ा ही unpredictable है! आप अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते की आने वाले वर्षों में भारतीय कॉमिक्स इंडस्ट्री के क्या दृश्य हो सकते हैं, फिर भी हम बेहतरी की ही उम्मीद रखते हैं। मुझे लगता है सभी कॉमिक्स कंपनियों को एक साथ आना चाहिए और कुछ ऐसे कदम उठाने चाहिए जिससे पूरी इंडस्ट्री का फायदा हो!

साथ ही पाठकों को भी हमारी मेहनत का सम्मान करते हुए ऑनलाइन पायरेटेड कॉमिक्स पढ़ने के बजाये खरीद के पढ़नी चाहिए...जिससे हमे प्रोत्साहन मिले।

ऋषभ : *क्या आपके पास fan को दुबारा से कॉमिक्स की ओर जोड़ने की कोई योजनाएं हैं, जब आज तरह तरह के साधनों ने fans को कॉमिक्स से विरक्त कर रखा है?*

पंकज जी : इस तरह की तो कोई प्लानिंग फिलहाल नहीं है! पर दरअसल कॉमिक्स के साथ साथ हमें Animated series, tv या हो सके तो फिल्म्स के माध्यम भी अपनाने चाहिए। और जब audience का ध्यान आकर्षित होने के बाद हम उन्हें कॉमिक्स की तरफ ले जा सकते हैं, जो की इन अलग अलग medias का आधार होगा!!

ऋषभ : *आपके targeted readers कौन हैं?*

पंकज जी : Our target audience is mostly 18+

ऋषभ : *क्या आपको लगता है की हिंसा, अपशब्द और व्यस्क content से पाठक आकर्षित होते हैं? या एक अच्छे से कही गयी कहानी और उसी तरह के आर्टवर्क से काम हो जाता है?*

पंकज जी : मुझे नहीं लगता की ऐसे कंटेंट्स हमेशा ज़रूरी होते हैं, लेकिन अगर कहानी की मांग हो तो फिर आप रोक भी नहीं सकते!! पर हर अच्छी कॉमिक्स के लिए, एक अच्छी कहानी और साथ में अच्छा सा आर्टवर्क ज़रूरी तो होता ही है (sometimes)

ऋषभ : *आयुमि प्रोडक्शंस के भविष्य के प्लान क्या हैं?*

पंकज जी : फिलहाल के लिए एक ही प्लान है की 2017से कॉमिक्स को yearly publish करना वो भी Graphic Novel के तौर पे!

ऋषभ : *आपको पहली बार कब लगा की नहीं अपना खुद का कॉमिक्स पब्लिकेशन हाउस खोलना चाहिए?? इस विचार की ओर किसने धकेला?*

पंकज जी : I am a huge Comic fanatic! बचपन से ही कॉमिक्स के प्रति मेरे प्रेम ने इसके रंगीन संसार की ओर खींचा है। और जब मुझे लगा की मैं वहाँ हूँ जहाँ होना चाहता था, तो फिर बचपन के उस सपने को साकार करने का मन हुआ जो अपनी पहली कॉमिक्स पढ़ते हुए मन में कौंधा था, और वो था खुद की कॉमिक्स खुद के बनाये चरित्रों पर based!! और उसी सपने की ऊर्जा और जूनून ने मुझे AYUMI PRODUCTIONS की शुरुआत के लिए मजबूर कर दिया!!

ऋषभ : *कॉमिक्स की publishing एक अकेले हाथ का उपक्रम हो ही नहीं सकता!! ऐसे में आपका support system कौन रहा या रहे हैं?*

पंकज जी: निश्चित रूप से मेरा परिवार और Aayumi के टीम के रूप में मेरा विस्तृत परिवार

ऋषभ : *क्या आप अपनी कम्पनी में नयी प्रतिभाओं को मौक़ा देंगे?*

पंकज जी : I think नए लोगों में गजब का potential है, उन्हें बस एक platform की ज़रूरत है जिससे वो खुद को prove कर सकें!! अगर हमारे पास अच्छी स्क्रिप्ट्स के साथ नए लोग आते हैं तो हमें बहुत खुशी होगी उनको साथ जोड़कर।।

ऋषभ : हम *निकट भविष्य में Aayumi Productions से क्या उम्मीद रख सकते हैं?*

पंकज जी : हमने इस साल एक break लिया है! चूंकि हम स्वतंत्र प्रकाशक हैं, तो budget manage करना अक्सर कठिन हो जाता है। हम outsourcing के साथ अलग अलग प्रोजेक्ट्स पे भी काम कर रहे हैं, ताकि मिलने वाले पैसे अपनी कॉमिक्स में डाल सकें!! बिना किसी समझौते के हम लगातार प्रयास कर रहे हैं की हम जितना कर सकते हैं उससे ज्यादा कर पाएं।। झंस रु३ और प्जमउ कीं‍उां पिदंसम चतवबमे में हैं, जो की अगले साल आपके हाथों में हो 2017 से हम हर साल Graphic Novels भी प्रकाशित करेंगे, We will come back with a bang and never let you down

तस्कर

स्टोरी - कीर्ति रम्भतला
लेखन - सुदीप मेनन
पेन्सिलर - मोहित आर्या
कलरिंग - ज़ाकिर हुसैन
शब्दांकन - दयाल सिंधी
कवर आर्ट - जगदीश कुमार देवायु

समीक्षा • मनीष मिश्रा

तस्कर ग्राफिक नावेल हिंदी कॉमिक जगत की परम्परा गत सोच से अलग एक प्रयोग है। विदेशों में ऐसे प्रयोग पहले भी सफल रहे है पर भारतीय कॉमिक जगत में यह पहला प्रयास है।तस्कर एक सुपरहीरो पर आधारित न होकर एक आम इंसान पर लिखी गई है। किस तरह एक आम इंसान अपने देश के लिए अपने समाज के लिए खड़ा होता है। तस्कर के मुखय किरदार अर्जुन विदेश में शिछित है, उसे कई रहस्य पता चलते है। और शुरू होता है षड्यंत्रों की परते खोलने का सफ़र तस्कर के रूप में। कहानी भी अलग अलग समय में जाती है । किस तरह आज मे उठे सवालों का जवाब बीते हुए कल में छुपा होता है। इस धारणा पर यह ग्राफिक नावेल बेस्ड है। कहानी में लेखक ने अपनी कल्पना शक्ति के साथ साथ वैज्ञानिक सोच का भी प्रयोग किया है। कहानी हैकिंग , अर्थव्यवस्था और विज्ञान का मिला जुला रूप है।आगे आने वाले भागों में तस्कर में अर्थव्यवस्था से जुड़े की रोचक पहलु भी जानने को मिलेंगे। पर पहले भाग में सिर्फ सवाल उठे है, जिनके जवाब एक अर्थशास्त्र प्रोफेसर के पास हैं।इन सवालो के जवाब हमे तस्कर सीरीज की आने वाली बुक्स में मिलेंगे। कम पेज होना किताब का एक कमजोर पक्ष है, इसके वजह से कहानी को स्वाभाविक विस्तार नही मिल पाया है। और कहानी उलझी हुई लगती है।किताब का अंग्रेजी भाषा में होना भी एक कमी है, जिसकेई वजह से पाठक वर्ग सीमित है ।

चित्रांकन किताब की एक कमजोर कड़ी है, चित्रों में एक प्रोफेशनल टच मिसिंग है, स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। विदेशी कॉमिक से प्रतिस्पर्धा के दौर में चित्रांकन बचकाना सा लगता है, चूँकि बुक का कंटेंट किशोर तथा वयस्कों के लिए है तो चित्रण भी उसी स्तर का होना चाहिए।शब्दांकन ठीक है, पर कोई भी संवाद बहुत ज्यादा प्रभावी नही बन पाया है।

कुल मिलाकर तस्कर विज्ञान रोमांच और रोचक जानकारियों से भरी हुई एक अच्छी कहानी है। कई कमियो के बावजूद तस्कर लीक से हटकर कॉमिक जगत में, जगह बनाने में कामयाब रहेगी। आने वाले भागो में इन कमियों के दूर होने की आशा है।फेनिल कॉमिक्स ने इस प्रकाशित करके एक साहसिक कदम उठाया, और कॉमिक प्रेमियो को तोहफा दिया है। पर अभी फेनिल कॉमिक और तस्कर दोनों को लम्बा सफ़र तय करना है।

कॉमिक्स जंक्शन की रोमांचक दुनिया में आपका स्वागत है, जहां रचनात्मकता की कोई सीमा नहीं हैं। हम सिर्फ एक कॉमिक्स फैंस के समूह नहीं हैं, हम कल्पना, रोमांच और कलात्मकता के ब्रह्मांड का प्रवेश द्वार हैं। 🦋

❁ *आप हमसे सभी प्लेटफार्म (सोशल-मीडिया) पर जुड़ सकते हैं।* ❁

Facebook Page ⇛ JOIN NOW

Facebook Group ⇛ JOIN NOW

ChatWise Group ⇛ JOIN NOW

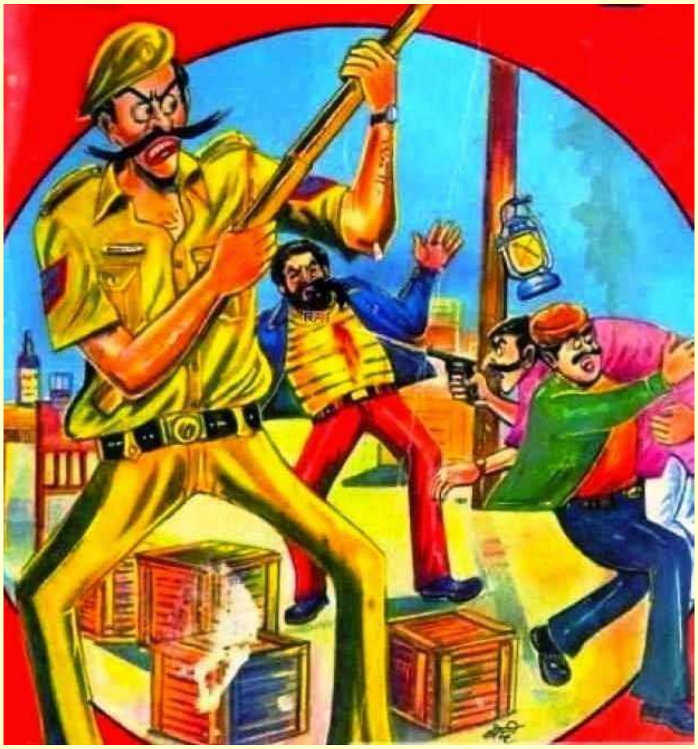
WhatsApp Group ⇛ JOIN NOW

Telegram Channel ⇛ JOIN NOW

New Comics Updates ⇛ JOIN NOW

Visit Website ➪ https://ComicsJunction.Stck.Me

नोंट : किसी भी चैंनेल/पेंज या ग्रुप मे ज्वॉइन होने के लिए JOIN NOW बटन पर क्लिंक करें।



हवलदार बहादुर : खड़ी हिंदी का जिन्न

शम्भु नाथ महतो

मनोज चित्रकथा में "हवलदार बहादुर" नाम शीर्षक से एक यादगार किरदार पेश किया गया जिसके लेखक विनय प्रभाकर और चित्रकार जीतेन्द्र (एस.) बेदी जी थे। इनके अलावा अंसार अख्तर जी ने अपनी १६ में से जिनमे से इक्का-दुक्का कामिक्से बीच सीरीज में लिखी जैसे 'मस्तान डाकू' और ज्यादातर बाद की कामिक्सो में लेखन किया, बाद के समय में लेखक विकास गुप्ता ने ५ कमिक्सो में लेखन किया। एक मल्टी-स्टार कामिक्स "ड्राकुला का प्रेतजाल" जिसमे हवलदार बहादुर आये जिसमें चित्रांकन दिलीप कदम, उमाकांत कानडे और लेखन नाजरा खान जी ने किया था अन्य सभी कामिक्सों में विनय प्रभाकर जी के कंधो पर ही हवलदार बहादुर बैठ कर बड़े धाकड़ कारनामे करते रहे जिनका अकेले जे। एस। बेदी जी ने चित्रांकन किया था, सिवाय करीब ६ कामिक्सों के जिनमे कुछ सहयोगी चित्रकारों के चित्रांकन थे, ये थे गौरव, मोनिका, अमित, श्रीकांत, अनूप, राजकुमार, अरुण भनोट, अनिल। यह तो रहा किताबी लेखा-जोखा पर शायद कहीं न कहीं यह लेखा-जोखा उम्रदराज होते व अप्रासंगिक होती कहानियों और केबल टी। वी., इन्टरनेट, मोबाइल के उद्भव से उत्पन्न भारतीय कामिक्स प्रकाशनों की असफलता की ओर भी संकेत करता है शायद इसलिए ही हवलदार बहादुर की बाद कामिक्सों से हास्य के कुत्ते फेल हो गए थे। पर एक समय था जब हवलदार बहादुर के कुत्ते सबसे तेज थे।

"हवलदार बहादुर" चित्रकथा की शुरुआत ही एक मजाकिया टिपण्णी से की गई थी जो हवलदार बहादुर का चरित्र -व्याख्यान कर देती है "यह हैं श्रीमान हवलदार बहादुर सिंह! यह कितने बहादुर हो सकते हैं, इनके शरीर की बनावट ही बता रही है!" शायद ही किसी ने सोचा हो की एक दुबला पतला व्यक्ति जो रिश्वत दे कर हवलदार बन गया हो और रोज अपने सीनियर पोलिस वालों से अपनी बेइज्जती करवाता हो एक दिन "भारत का सर्वाधिक बिकने वाला हास्य कामिक्स" का बेताज बादशाह बनेगा। पर क्या हवलदार बहादुर की सफलता मात्र एक संयोग थी या उसमें

उनके कामिक्स में लिखे गए आज के हिस्साब से रद्दी हो चुकी उट –पटांग हास्यों का कोई योगदान था? यह ६० का दशक वह समय था जब "पुलिस" का रोजमर्रा के जन–जीवन में फुटपाथ पर दुकानदारों से हफ्ता उगाहने वाले एक अहम् रोल के साथ–साथ एक कामचोर, कायर, लालची, रिश्वतखोर, अपराधों को शह देने वाले व्यवसाय के रूप में चित्रण स्वीकार हो चुका था। हवलदार बहादुर के चरित्र के केंद्र में उनके इन्ही सार्वभौमिक नियमों का पालन करते हुए "अनुचित" तरीके से पोलिस बन जाना उनके कामिक्स के सह–किरदारों द्वारा उनके लिए दिल में भड़ास की तरह रखी जाने वाली भावनाओं का मूल था। परन्तु हवलदार बहादुर कुछ मायनों में उस समय के असली समाज के सेट पुलिसिया–मूल्यों से परे जाने की कुवत रखते थे हालाँकि उसके लिए शरीर में उनके जान एक झापड़ खा सकने जितनी थी। यहीं उनके कहानियों का दूसरा पहलू उभर के आता है वह है उनकी अच्छी किस्मत और अच्छे साथी जैसे पहलवान टुंड, प्रोफेसर पी.पी., जिन्ना और उनकी पर्सनल हिटलर चम्पाकली उनकी धर्मपत्नी। शायद ये उनकी धर्मपत्नी द्वारा हफ्ते के आठों दिन के अत्याचार के प्रसंग ही थे की अपनी भड़ास वे हर रस्ते में मिलने वाले हर दुसरे टुच्चे इंसान से पंगे लेकर और उन्हें हवालात में सड़ाने की धमकी देकर निकालते थे। हवालदार बहादुर का चरित्र व कहानियां उस ६० के दशक का माहौल–चित्रण करती थीं जिससे हर कोई उस समय ताल्लुक रखता था।

उनकी उत्तर भारतीय जीवन शैली से उपजी शालीन अपशब्दों पर पकड़ का ही नतीजा था की वे जन–प्रिय हो गए थे यहाँ तक की ज्यादा अकड़ने, बहादुरी दिखाने वाले, पंगे लेने वाले को उत्तर भारतीय सभ्य समाज यह कहकर झाड देता था "ज्यदा हवलदार होरा के", "मने ज्यादा हवलदारी न दिखाए". एक समय था जब उनकी कामिक्स ईमानदारी की तरह दुकान पर नहीं मिलती थीं क्यूंकि वो किराये पर कामिक्स पाठको के घर–घर घूमती रहतीं थीं। यह हवलदार बहादुर के शुद्ध व कभी–कभार के दोहरे–मायने वाले हास्य का कमाल ही था की जवान और उम्रदराज लोग भी उनकी कामिक्स को अपने याडी की कामिक्स समझ कर पढने से पीछे नहीं हटते थे। शायद वो पहले ऐसे चरित्र थे जिन्होंने उत्तर भारतीय शुद्ध खडी हिंदी को डंके की चोट पर खडा करके दिखाया था।


freelance
TALENTS
मोहित शर्मा
तदम ग्यादू

निर्मूलक क्रांति

लेखक - मंदार गंगेले
चित्रांकन - दिलदीप सिंह, गौरव श्रीवास्तव, सुशांत पंडा, तदम
रंग सज्जा - भक्त रंजन, प्रसाद पटनायक
शब्दांकन - मंदार गंगेले

समीक्षा • मनीष मिश्रा

राज कॉमिक की अभी चल रही सीरीज में बाल चरित के बाद अगर किसी सीरीज को लेकर पाठक उत्सुक है तो वो है डोगा उन्मूलन श्रृंखला। डोगा के अस्तित्व के एक अलग पन्ने को खोल रही है ये सीरीज।कुत्ते के पिल्ले से डोगा बनने तक सफर में जिन अँधेरी गलियो से होकर गुजरा है सूरज और उन गलियो में उसे दुत्कारने और पुचकारने वालो का जिक्र करती है ये सीरीज।डोगा के अस्तित्व की धज्जियां उड़ाने उसके बीते हुए कल से निकल आया है निर्मूलक उर्फ़ अंश। हम कितना भी भाग ले पर कभी भी अपने अतीत से भाग नही सकते, यह जीवन का एक कड़वा सच है। हमारा बीत हुआ कल हमारे आने वाले कल को हमेशा डराता है।ये कल न तो सूरज का पीछा छोड़ रहा है और न ही उससे जुड़े लोगों का। निर्मूलक नामक ये शख्स डोगा के अतीत का ही एक साया है, ये राज धीरे धीरे खुल रहा है। हमारे गुनाह सारी जिन्दगी हमारा पीछा नही छोड़ते। और सारे गुनाहों की सजा इस धरती पर ही मिलती है। युसूफ के गुनाहों ने ही उसके बेटे समीर की जान ली।

इस भाग में निर्मूलक का रहस्य की परते खुल रही हैं।कहानी ई कुछ बाते बहुत खास है, जैसे अपराध की दुनिया में किसी पर भी भरोसा नुकसान देह होता है। युसूफ के अपनो ने ही उसे धोखा दिया और उसके ख़ात्मे की नींव रखी।लक्कड़ को भी धोखा उसके अपने आदमी ने ही दिया। निर्मूलक ने अपना हर कदम सोच समझ कर रखा है। पाण्डे जैसे धोखे बाज और लालची बहुत आसानी से मिल जाते है। तेजा जैसे ईमानदार लोग कम ही होते हैं।

यह एक भावनात्मक कहानी है और कॉमिक हर किरदार के भावनात्मक पहलु को दिखाने में सफल रही है।चाहे वो अंश की अपनी माँ के प्रति प्रेम हो, लक्कड़ का राधिका के लिए प्यार हो या फर यूसुफ का अपने बेटे के लिए स्नेह हो।

डोगा की कहानियों की खास बात ये होती है की वो कही न कही समाज के किसी मुद्दे से जुडी होती हैं और कोई न कोई सीख देती है। इस भाग में भी ये खासियत बरकरार है।इस भाग में जो सामाजिक मुद्दा सामने आया है, वो यह है क़ि हर अपराध की जड़ गरीबी है, या तो आप गरीब जो खत्म कर दो या गरीबी ख़त्म करो।मुम्बई की धारा नगरी का जिक्र लेखक ने इसी उद्देश्य से किया है। खैर निर्मूलक गरीब को खत्म करना चाहता है जो गलत है।

निर्मूलक क्रांति का आर्टवर्क साथ ही प्रकाशित सर्वशक्ति से काफी का अच्छा बना है। कुछ फ्रेम्स में आर्टवर्क संतोष जनक है, और एक अच्छी कहानी उस कमी को पूरा करती है। सबसे निराशा जनक है कॉमिक का कवर पेज जिसमे कुछ नया नही है।

शब्दांकन काफी अच्छा है। मुम्बईया भाषा का प्रयोग इसे और अच्छा बना देता है। पुलिस वालो द्वारा मराठी भाषा बोलना सिमसा को एक वास्तविक अनुभव देता है। लक्कड़ और बाकि गुंडों द्वारा टपोरी भाषा का प्रयोग काफी बेहतर है।

अरसे बाद अचछी कॉमिक जो पाठक फैन और आलोचक दोनों को संतुष्ट करेगी।

बहादुरी

कहानी • राकेश वर्मा

सुबह हो चुकी थी सूरज सर पर चढ़ आया था पर हवलदार बहादुर उठा नही था क्योकि आज उनको ड्यूटी से छुट्टी मिली थी ।

चम्पाकली हवलदार को उठा रही थी

चम्पाकली = उठो जी । कब तक सोओगे ।

हालदार = (हुंह बड़े प्यार से उठा रही है कुछ तो गड़बड़ है । थोड़ी देर और चुपचाप पड़ा रहता हूँ।)

चम्पाकली = अजी सुन रहे हो? उठ जाओ ना प्लीज।

हवलदार = (हीहीही। नही उठूँगा।)

चम्पाकली = उठो ।

हवलदार को न उठता देख अचानक चम्पाकली के तेवर बदल गए । पानी की बाल्टी लायी और हवलदार पर फेंक दिया।

हवलदार =गुलुप बाढ़ आ गयी ।

चम्पाकली = कोई बाढ़ नही आई । गुर्रर्र

हवलदार = यह कोनसा तरीका है अपने पति को उठाने का गुर्रर्रर्र।

चम्पाकली = तुम्हे इतनी देर से प्यार से उठा रही थी । पर तुम जान बुझ कर पड़े थे जैसे कुत्तो को घी हजम नही होता वैसे तुम्हे भी इज्जत रास नही आती। गुर्रर्रर

हवलदार = ठीक है अब बता क्यों उठा रही थी । हीहीही

चम्पाकली = (प्यार से) आज तुम्हारी छुट्टी है कही घूमने चले ।

हवलदार = ठीक है आज तेरी इच्छा भी पूरी कर देता हूँ तू भी क्या याद रखेगी की कितना दिलदार पति मिला है हीहीही

इतने में कोई दरवाजा खटखटाता है ।

हवलदार = कोण है बे। अबे आ रहा हूँ अब क्या दरवाजा तोड़ेगा । गुर्रर्रर

हवलदार ने दरवाजा खोला तभी उनकी नाक पर मुक्का पड़ा।

हवलदार = आह्ह अबे नाक तोड़ दी । हवालात में सड़ा डालूँगा साले को।

रतनसिंह = यह मैं हूँ हवलदार रतनसिंह ।

हवलदार = तो मेरी नाक तोड़ेगा। गुर्रर्रर्र

रतनसिंह = वो मैं दरवाजा खटखटा रहा था और तुमने दरवाजा खोल दिया तो मुक्का तुम्हे लग गया।

हवलदार बहादुर = (मुझसे पंगा अभी बताता हूँ) जब मैंने घंटी लगवायी है तो दरवाजा क्यों खटखटा रहे थे। गुर्रर्र

रतनसिंह = वो मैंने जल्दबाजी में ध्यान नही दिया । हीहीही

हवलदार बहादुर = अब तो पता चल गया न । बजा कर देखो। हीहीही

रतनसिंह = पर अब तो तुम आ गए ।

हवलदार बहादुर = एक बार बजा कर देखो ताकि तुम्हे यह आगे से घंटी याद रहे।

रतनसिंह ने घंटी बजाने के लिए बटन दबाया और उसे करंट लगा ।

हवलदार बहादुर = ओह्ह मैं तो भूल ही गया था की घंटी ख़राब है हीहीही (अब आया मजा) वैसे तुम आये क्यों थे

रतनसिंह = गुर्रर्र वो मैं तुम्हे बताने आया था की तुम्हारी छुट्टी केंसिल कर दी है । साहब ने बुलाया है तुरंत।

रतनसिंह यह बता कर चला गया।

हवलदार बहादुर = इस खडकसिंह को भी चैन नही है । साला मेरे ही पीछे पड़ा रहता है गुर्रर्र

चम्पाकली= क्यों चिल्ला रहे हो । और यह नाक किसने लाल कर दी । हीहीही

हवलदार बहादुर = ज्यादा हीहीही मत कर वरना....

चम्पाकली = वरना क्या.... गुर्रर्र मुझे ज्यादा रौब दिखाया तो बेलन ठूंस दूंगी नाक में ।

तभी टुण्ड आ जाता है ।

टुण्ड = फूफी आज फिर फूफा की खाट खड़ी कर रही है क्या। हीहीही

हवलदार बहादुर गुर्रर्र= ओये तू मुझसे तमीज से बात किया कर । हवालात में सड़ा दूंगा नही तो।

चम्पाकली =टुण्ड पर क्या चिल्लाते हो मुझसे बात करो । गुर्रर्र

माहौल गरम होता देख हवलदार बहादुर वहाँ से खिसक लेते है ।

हवलदार बहादुर = मुझे तुम्हारे मुँह नही लगना । मैं लेट हो रहा हु । हुंह

चम्पाकली = मुंह लगना भी मत नही तो तोड़ दूंगी ।

हवलदार बहादुर तैयार होकर थाने जाने लगता है । घर से बाहर आकर एक टेक्सी में सवार होता है। टेक्सी थाने के सामने रुकती है। हवलदार टेक्सी में से उतर कर जाने लगता है । टेक्सी वाला उसे रोक कर पैसे मांगता है।

हवलदार बहादुर = अबे पुलिस से पैसे मांगता है । गुर्रर्र हम तुम्हारी सुरक्षा करते है मैंने तो तुमसे पैसे नही मांगे।

टेक्सीवाला = आपको तो सरकार तनख्वाह देती है।

हवलदार बहादुर = हवलदार से जवान लड़ाता है । गुर्रा हवालात में सड़ा दूंगा ।

हवालात का नाम सुनते ही टेक्सीवाला टेक्सी लेकर नो दो ग्यारह हो गया।

हवलदार बहादुर खड़कसिंह के सामने हाजिर होता है।

खड़कसिंह = उल्लू के चरखे कहाँ थे अब तक । लेट क्यों आये ।

हवलदार = मैं तो कहीँ लेटकर नही आ रहा साहब । हीहीही लेटकर कोई कैसे आ सकता है।

खड़कसिंह = बकवास बंद करो और सुनो। आज सुबह जेंगा नामक बदमाश एक चेक नाका तोड़ इंस्पेक्टर धरती पकड़ को चकमा देकर भाग निकला है ।

हवलदार = धरती पकड़ तो हिलाने में माहिर हैं जेंगा उनको ही हिला कर भाग गया । हीहीही

खड़कसिंह = ज्यादा हीहीही मत करो हमें जेंगा को जल्द ही पकड़ना है उसके कोई अपराध करने से पहले । तुम्हारी ड्यूटी सदर बाजार में लगायी है। जाओ

हवलदार (जब देखो मेरे पीछे ही पड़ा रहता है । गुर्रर्रर)

सदर बाजार

हवलदार = अच्छा हो अगर आज किसी बदमाश से पाला नही पड़े हीहीही नही तो फालतू का झंझट हो जायेगा । छुट्टी ख़राब हो गयी

हवलदार टीवी की एक दुकान के सामने से गुजरा। दुकान में टीवी की आवाज़ तेज थी ।

हवलदार (साला तेज आवाज़ में टीवी चलाता है अभी खबर लेता हूँ।)

हवलदार बेदड़क दुकान में घुस जाता है पर अंदर तो मामला ही अलग था । २ बदमाश दुकानदार को लूट रहे थे और उनके हाथ में बन्दुक थी।

बदमाश= ये हवलदार यहां कैसे आया। ख़बरदार अगर कोई चालाकी की तो ।

हवलदार = (डरते हुए) न... नहीं मैं कुछ नही करूँगा । मैं तो गलती से अंदर घुस आया था ।

बदमाश = हम जा रहे है पर तुम में से कोई चिल्लाना नही और न ही दुकान से बाहर निकलना ।हमारा एक आदमी बाहर खड़ा है । अगर तुमने कुछ गड़बड़ की तो वो गोली मार देगा ।

हवलदार = म.... मैं कुछ नही करूँगा ।

दोनों बदमाश भाग जाते है ।और दुकान में बहुत देर तक दुकान मालिक और हवलदार चुपचाप खड़े रहते है। तभी वहां खड़कसिंह पुलिस फ़ोर्स के साथ आता है।

खड़कसिंह = मुझे पडोसी दुकानदारो ने खबर की है की यहाँ से कुछ बदमाश हाथ में बन्दुक लेकर भागते देखे गए है।

दुकानदार = हाँ वो मुझे लूट कर चले गए और आपके हवलदार ने उन्हें जाने दिया। बुहुहु

खड़कसिंह = हवलदार बहादुर तुमने उन्हें क्यों जाने दिया ।

हवलदार = उनके पास बन्दुक थी । मैं कुछ करता तो वो मुझे गोली मार देते ।

खड़कसिंह = यही बन्दुक थी।

हवलदार = हाँ यही थी ।

खड़कसिंह= (गुस्से में) गधे यह बन्दुक नकली है वो तुम्हे उल्लू बना गए । यह बन्दुक हमें थोड़ी दूर पड़ी मिली । तुमने पुलिस की नाक कटा दी । तुम सस्पेंड किये जाते हो। गुर्रर्र

हवलदार यह सुनते ही खड़कसिंह के पैर पकड़ लेता है।

हवलदार = नही सर ऐसा मत कीजिये ।

खडकसिंह = अबे पैर छोड़ गिराएगा क्या ।

हवलदार = नही ।

खडकसिंह = ठीक है तुम्हे एक मौका और देता हूँ । तुम जाकर बाजार में गश्त जारी रखो।

हवलदार वहाँ से आ जाता है। पर उसका मुंह लटका हुआ था ।

हवलदार (इंस्पेक्टर की नज़र में मैं मुर्ख साबित हो गया । जब तक मैं किसी अपराधी को पकड़ न लू तब तक अपना सम्मान वापस नही मिलेगा।)

हवलदार यह सोचकर घर आ जाता है और अपना हुलिया बदल कर जासूसी करने की सोचता है। वह एक सब्जिबेचने वाले का हुलिया बनाता है और अपने कमरे से बाहर निकलता है तो उसे चम्पाकली दिखती है।

हवलदार = ओये चम्पी मैं सही लग रहा हूँ न ।

चम्पाकली पहचान नही पाती और अनजान आदमी को घर में देखकर उसका पारा चढ़ जाता है।

चम्पाकली = अबे ओये तू मेरे घर में क्या कर रहा है । ऊपर से मुझे छेड़ता है। रुक गुर्र्रर्र

हवलदार कुछ कह पाता इससे पहले ही चम्पाकली ने उसे पकड़ लिया और उसको धुनकर रख दिया ।

हवलदार = अबे क्या कर रही है हाय । मेरी बात तो सुन

चम्पाकली = तेरी तो । मेरे घर में जबरदस्ती घुसेगा । गुर्र्र

इतने में ही टुण्ड आता हैं

तुण्ड = फूफी किसे रगड़ रही है।

चम्पाकली = यह जबरदस्ती घर में आ गया है और मुझे छेड़ रहा था। गुर्र्र

तुण्ड = इसकी यह मजाल मेरी फूफी को छेड़ता है अभी रगड़ता हूँ ससुरे को। गुर्र्र

फिर तो टुण्ड ने हवलदार के सारे जोड़ हिला डाले । हवलदार फटेहाल हो चूका था ।

हवलदार = अबे मेरी बात तो सुन मैं हूँ थारो फूफा । बुहुह

टुण्ड = आंय यह तो फूफा है । मैंने फूफा ने ही रगड़ दिया । हीहीही

चम्पाकली = हाय यह आप हो बताना चाहिए था न ।

हवलदार = इतनी देर से बताने की कोशिश कर रहा हु तुम सुनो तब ना । हाय रुई की तरह धुन दिया ।

चम्पाकली = गलती तुम्हारी ही है तुम यह अपना हुलिया क्यों बदल रखा है । हवलदारगिरी छोड़ कर अब सब्जी बेचोगे क्या । हीहीही

हवलदार बहादुर = फालतू की बात न कर । मैं तो हुलिया बदल कर जासूसी करने जा रहा था ।

टुण्ड = अंह उस बॉन्ड की तरह । हीहीही और फूफी ने थारी सारी बोन्डगिरि निकाल दी हीहीही।

हवलदार ने हुलिया ठीक किया और बाजार में पुरे दिन घूमता रहा । तभी उसे एक संदिग्ध आदमी नज़र आया उसे गोर से देखने पर पहचान गया वह जेंगा का साथी कल्लू था। हवलदार उसके पीछे लग गया।

हवलदार कल्लू का छुप छुप कर पीछा कर रहा था ।

कल्लू एक कार में बैठ कर चला जाता है । हवलदार भी एक ऑटो रोकता है और बैठ कर उसका पीछा करने को कहता है।

कल्लू एक जगह उतरता है और एक मकान में घुस जाता है । हवलदार भी ऑटो वाले को रुकने की बोल कर मकान के अंदर चला जाता है ।

अंदर कल्लू एक सौदेबाजी कर रहा था की तभी हवलदार बहादुर एंट्री मारता है।

हवलदार बहादुर= कोई हिलना मत नही तो थुथरा रगड़ दूंगा ।

कल्लू = अबे कोण है तू और तेरी यह मजाल की हमसे पंगा ले ।

हवलदार = मैं हवलदार बहादुर हूँ और तेरा पीछा करते हुए यहां आया हूँ

कल्लू = अबे सिंकड़ी तू अकेला क्या कर लेगा।

हवलदार "सिंकड़ी" सुनते ही बिफर जाता है और कल्लू के मुक्का जमा देता है।

थोड़ी देर हाथापाई होती है पर कल्लू हवलदार पर भारी पड़ जाता है और एक करारा वार कर देता है जिससे हवलदार बहादुर बेहोश हो जाता है।

कल्लू = ज्यादा श्याणा बन रहा था । इसको अड्डे पर ही ले चलता हूँ बॉस ही इसकी खबर लेंगे। हीहीही

कल्लू हवलदार को अपनी कार में रखकर ले जाता है।

टुण्ड बाजार में घूम रहा था की उसकी नज़र बेहोश हवलदार पर पड़ जाती है।

टुण्ड = लागे है म्हारे फूफा ने कोई उठा के ले जा रियो है। इकि यह हिम्मत । गुर्रर्र फूफा के अफसर ने बताता हूँ।

टुण्ड खडकसिंह को खबर दे देता है।

तुण्ड एक टेक्सी रोकता है और कार का पीछा करने को बोलता है।

कल्लू शहर से बाहर एक खण्डहर में आता है। और कुछ आदमियो की सहायता से हवलदार को भी अंदर ले जाता है।

टुण्ड भी उसके पीछे वहाँ तक आता है ।

जेंगा एक कुर्सी पर बैठा था ।

जेंगा = आओ कल्लू पैसा के आये ।

कल्लू = हाँ बॉस । पर एक हवलदार मेरा पीछा करके मेरे तक पहुँच गया था पर मैं उसे बेहोश करके यहां ले आया।

जेंगा = बढ़िया किया इसे एक कमरे में बंद कर दो । इसकी खबर बाद में लूंगा।

हवलदार को एक कमरे में बंद कर देते है।

टुण्ड यह सब छुपकर देख रहा था । और जेंगा के आदमियो के जाते है ही हवलदार जिस कमरे में बंद था उसका दरवाजा तोड़ कर अंदर घुस जाता है ।

हवलदार = अरे यह क्या । ओये टुण्ड । बड़े अच्छे मौके पर आया है ।

टुण्ड = मैं तो इनका थुथरा कब का रगड़ देता पर इन्होंने तन्ने पकड़ा राखा था । इसलिए पहले तन्ने छुड़ाया है।

हवलदार = बढ़िया किया । हीहीही अब उनकी खेर नही उन्होंने हवलदार बहादुर से पंगा लिया है ।

हवलदार बहादुर और टुण्ड कमरे बाहर निकलते है और जैसे ही जेंगा का आदमी मिलता है टुण्ड उसकी मरम्मत कर देता है ।

जेंगा और उसके आदमी फायरिंग करने लग जाते है । तभी खड़कसिंह पुलिस फ़ोर्स के साथ आता है और सब गुंडों को घेर लेता है ।

खड़कसिंह = बहुत अच्छे हवलदार बहादुर । तुमने जेंगा को पकड़वा ही दिया । पर इतना खतरनाक काम अकेले नही करना चाहिए था ।

हवलदार बहादुर = सर जी मैं भी कम खतरनाक नही हूँ हीहीही।

समाप्त।

द लीजेंड्स ऑफ बुद्धा

ब्रम्हा पटेल

चीन १८वी सदी –
बहूत पहले की बात है तब चीन मे एक क्रूर शासक 'ली वांग' का राज था । जो अपनी प्रजा पर बहूत जुल्म करता था । वो अपने गुरु के कहने पर बच्चों का अपहरण कर उसका खून पीता था ।उसका मानना था की वो जब तक बच्चों का खून पीता रहेगा वो जवान और ताकतवर रहेगा ।
ली वांग के पास कई चीनी शैतानी ताकत थी जिसके कारण कोई भी उसके सामने सर उठाने की हिम्मत नही करता था
वही उसके राज्य के कुछ मील दूर एक बुद्धा का मठ था। जहा बौद्ध धर्म के अनुयायी और उसके परिवार रहते थे ।

इस मठ का पुजारी देवव्रत केरल के शासक देवधर का पुत्र था । जो शांति के तलाश मे यहाँ चीन आ गया था। और उसने बौद्ध धर्म अपना लिया था उसकी एक पत्नी शांति देवी और एक पुत्र देवराज था....
देवव्रत मठ का सारा काम काज सम्भालता था और गरीबो बीमारो की सेवा करता था । ली वांग से प्रताड़ित और खौफ जदा लोग इस मठ मे शरण लेते थे ।
ली वांग को इस मठ से कोई मतलब नही था । इस लिए वो इस पर कोई ध्यान नही देता था पर एक दिन....!

"..ली वांग तुम यहाँ से दक्षिण मे जाओ वहा बुद्धा का मठ है अगर तुम उन बौद्ध अनुयायी का रक्त पान करो । फिर तुम असीम शक्तिशाली हो जाओगे.."
ली वांग के गुरु ने ली वांग को कहा

"..जो आज्ञा गुरुजी । उस मठ पर तो मेरी नजर बहूत दिनों से थी .."
ली वांग ने एक रहस्मय मुस्कान से कहा ।

ली वांग ने अचानक ही मठ मे हमला कर दिया और रक्त की नदिया बहा दी। ली वांग के सौनिको ने क्रूरता पूर्वक मठ के बौद्ध भिक्षु को मार दिया । ली वांग किसी पिशाच की तरह बौद्ध अनुयायियो का रक्त पान किया। मठ के पुजारी देवव्रत और उसके पुत्र देवराज ने विरोध किया.... तो ली वांग ने नृशंस पूर्वक देवराज का सर काट दिया....उसकी पत्नी को पहने ही सैनिक मौत के घाट उतार चुके थे....और देवव्रत को भी बुरी तरह स्व घायल कर दिया ।
पूरे बौद्ध मठ मे ऐसा खूनी खेल खेला उन शैतानो ने की मठ मे एक भी इंसान ना बचा.! पूरे मठ को शमशान बना दिया ली वांग ने

●●●

तेज हवाए चल रही है । जोरो की बारिस हो रही थी।
मठ के चारो ओर शांति थी । चारो ओर लाशो के ढेर लगे थे.,..अचानक एक कराहने की आवाज आई...वो पुजारी देवव्रत की थी...वो घिसट घिसट के रेंग रहा था .....बुरी तरह से घायल खून से लथपथ....वो घिसट रहा था । अचानक ही उसके सामने मे एक सन्यासी दिखाई दिए। और वो बेहोस हो गया

जब देवव्रत को होश आया । तो वो एक बौद्ध टेम्पल मे था। उसके शरीर मे सुईया चुभी हुई थी ।
तभी सन्यासी अंदर आया ।
"..देवव्रत तुम चिंता ना करो जल्दी ही ठीक हो जाओगे...."

".,आप कौन है..?"

"..मैं खुद नही जानता मैं कौन हूँ। बस बेसहारो की मदद करना मेरा धर्म है...तुम आराम करो.."

कुछ दिन बाद देवव्रत ठीक हो गया । वो सीधे भगवान बुद्ध के मूर्ति के पास गया।

"..बुद्धम् शरणम् गच्छामि। हे बुद्धा। मैं यो यहाँ शांति की तलाश ने यहाँ आया था। मैने तो किसी का कुछ भी अहित नही किया था। फिर क्यो,,..मेरी पत्नी मेरा पुत्र निर्दया पूर्वक मार दिया गया । मेरे सभी मित्र बौद्ध भिक्षु , यहाँ तक की मासूम बच्चों को भी ,किसी को नही छोड़ा उन जालिमो ने ....हमने किसी का क्या बिगाड़ा था....हम तो अहिंसा के पुजारी है। फिर ये सब क्यो हुआ हमारे साथ....बुद्धा...क्यो हुआ...!"
कहते हुते देवव्रत के आंखो से आंसू की धारा निकल पड़ी।
"..मत रो देवव्रत । इन आंशुओं को अपनी ताकत बना....उठ खड़ा हो और उन जालिमो को उसके किये की सजा दे ...तुम्हारा ये नया जीवन। इस धरती के समस्त पापियो के विनास के लिये है ।"
सन्यासी ने कहा

"..पर बाबा। मैं तो साधु हूँ । मैं शांति और अहिंसा का पुजारी हूँ। मैं अस्त्र शस्त्र नही उठा सकता.....मैं तो एक साधारण बौद्ध भिक्षु हूँ। मैं बुद्धा को मानता हूँ। और बुद्धा का सेवक हूँ और बुद्धा अहिंसा का प्रतीक है "

"..बुद्धा केवल अहिंसा प्रतीक ही नही...न्याय और धर्म का भी प्रतीक है। और न्याय ये कहता है की जब जब पापियो का पाप बढ़े । तो पापियो का संहार करो...."

"..पर कैसे बाबा....मैं उन शैतानो से कैसे लड़ सकता हूँ। मैं तो एक साधारण मानव हूँ। मुझे तो हथियार चलाना भी नही आता.."
देवव्रत ने कहा

"..तुम्हे सब आता है देवव्रत। पर समय के साथ तुम सब भूल चुके हो । आज मैं तुम्हे बचपन मे सीखी हुई। भारत की युध्द कला कलियारापट्टू को स्मरण करवाता हु " फिर सन्यासी ने देवव्रत के सर पे हाथ रखा।
"..मैं कलियारापट्टू के साथ साथ तुम्हे प्राचीन चीनी युद्ध की वो कला सीखा रहा हूँ। जो बेहद गुप्त और खतरनाक है। और ये दो उपहार कबूल करो । ये है निंजा तलवार जिससे तुम किसी भी धातु को काट सकते हो...ओर ये दुपट्टा..ये दुपट्टा नही एक घातक अस्त्र है...जिसका उपयोग करना खुद ब खुद जान जाओगे.....और तुम अब से देवव्रत नही 'बुद्धा' कहलाओगे । न्याय और धर्म का रक्षक "

कुछ देर मे देवव्रत की काया पलट हो चुकी है । सामने देवव्रत नही बुद्धा खड़ा था।.. एक लम्बा शाही कोट। बाल सफेद । सफेद दाढ़ी मूँछ। गले मे एक लम्बा दुपट्टा ..जो लहरा रहा था।

"..अब तुम देवव्रत नही तुम बुद्धा हो। भूल जाओ अपना भूतकाल। बस याद रखो तुम न्याय के रक्षक हो। जाओ बुद्धा....न्याय और धर्म का उदय करो."
सन्यासी ने मुस्कुराते हुए कहा ।

सन्यासी का आशीर्वाद लेके । बुद्धा निकल पड़ा मंजिल की ओर ।
सन्यासी वही खड़ा हो के मुस्कुराता रहा....शायद वो अपने कार्य मे सफल हो गया था । जिसके लिए उसे भेजा गया था !

'लीवांग का महल –'

ली वांग अपने दरबार मे शराब और सुंदरियों का नृत्य मे व्यस्त था ।

बाहर मुख्य द्वार पर बहूत से सौनिक पहरा दे रहे थे। तभी एक आहट हुई..

"..ए उधर कौन है.."
एक सैनिक ने कहा।
सामने बुद्धा खड़ा था ।

"..ए बुड्ढे कौन है तु। और यहाँ मरने क्यो चला आया.."
दो सैनिक ने बुद्धा के पास जा के सवाल किया।
". धडाक..."
दोनो सैनिक हवा मे उड़ते हुए दीवार से जा टकराये ।
दो सैनिको का हाल देख के सारे सैनिक सतर्क हो गए।
"..कौन हो तुम.."
सैनिक ने फिर पूछा ।

जवाब मे बुद्धा सिर्फ मुस्कुराया। और उसकी कनपटी पर उड़ते हुए लात जड़ दी ।
बाकी सैनिको ने तलवार लेकर बुद्धा पर हमला कर दिया ।
लेकिन तलवार का कोइ भी वार बुद्धा को छु भी नही पा रहा था। वो इतनी फुर्ती बच रहा था। सैनिक दंग रह गए ।
धडाक...धाड़.."
अपने हाथो और लातो से बुद्धा इतना भी"ाण प्रहार करता था। की सैनिक एक बार जमीन मे गिरते थे । तो उठ नही पाते थे । ....बुद्धा के हाथ पांव तेजी से चल रहे है। और सैनिको के हड्डियों के टूटने की आवाज साफ सुनाई दे रही थी....
कुछ ही समय मे सारे सैनिक जमीन मे पड़े कराह रहे थे ।
महल मे खलबली मच चुकी थी। और इधर ली वांग का सेनापति लियो ने बुद्धा का रास्ता रोक लिया ।

"..कौन हो तुम..."

बुद्धा ने कोई जवाब नही दिया ।

".मैं पूछता हूँ कौन हो तुम...और यहाँ किस मकसद से आये हो जल्दी बताओ। नही तो मारे जाओगे."

बुद्धा सिर्फ उसे मुस्कुराता हुआ देख रहा था। उसने कोई जवाब नही दिया ।लियो ने गुस्से से तलवार का प्रहार किया.....
बुद्धा ने बेहद फुर्ती से अपने दोनो हथेली के बीच मे रोका । और एक घूंसा उसके छाती मे मारा ।
लियो चीखता हु दूर जा गिरा ।
लियो उठ के फिट झपटा...लेकिन बुद्धा को वो छू भी नही पाया।
"..तड़ाक....धाड़

दो प्रहारो मे ही उसे बुद्धा की शक्ति का अंदाजा हो गया। उसने छत के सैनिको को इशारा किया। सैनिको ने छत से तीरो की वर्शा कर दी ।

बुद्धा एक क्षण रुका । फिर उसने अपनी निंजा तलवार निकाल ली । और उसे विद्युत गति से घुमाना चालू कर दिया ......
तीर आते जा रहे थे । और बुद्धा तलवार को तेजी से घुमाता जा रहा था ....सारे तीर कट कट के इधर उधर गिर रहे थे ।
फिर बुद्धा ने एक खास अंदाज ने निंजा तलवार को हवा मे फेंका...तलवार छत के सैनिको के सर काटते हुए बूमरैंग की तरह उसके पास वापस आ गई ।
ये दृश्य देख लियो की आँखे हैरत से फट गई ।
एक दर्जन सैनिक बुद्धा को पकड़ने के लिए लपके ।
बुद्धा ने अपना दुपट्टा निकला उसे एक खास अंदाज मे घुमाते हुए फेंका। दुपट्टा विद्युत गति से घूमते हुए। सैनिको के पेट को चीरते हुए निकल गया।
लियो से सब देख के लड़खड़ाता हुआ भागने लगा। पर बुद्धा ने पकड़ लिया।
अपने दो उंगलियो से एक खास अंदाज मे वार किया उसके गले पर..
",,कड़ाक..."

अक्..." लियो चीख भी नही पाया और उसकी गर्दन एक तरफ लुढ़क गई।
अब बुद्धा का खतरनाक रूप सामने आ गया था। सैनिको मे अफरा तफरी मच गई। सब अपनी जान बचा के भागने लगे ।
बुद्धा ली वांग के कक्ष मे पहुच चुका था

"..कौन हो तुम और अंदर कैसे आ गए.."
ली वांग ने आश्र्चर्य से कहा

जवाब बुद्धा अपने चिर परचित अंदाज मे मुस्कुराया और बोला।
".,बुद्धा.."

"..बुद्धा...कौन बुद्धा..."

बुद्धा ने कोई जवाब नही दिया।

"..तुम जो कोई भी हो यहाँ से जिंदा बच के नही जा सकते.."
फिर ली वांग ने हमला कर दिया। हालांकि लिवांग के पास शैतानी ताकत थी। फिर बुद्धा तो बुद्धा था।
"..धडाक.."
ली वांग दीवार तोड़ते हुए दुर जा गिरा।
लीवांग को बुद्धा की ताकत का अंदाजा हो गया।
उसके हाथ मे एक शैतानी शक्तियो से एक तलवार प्रकट हो गई।
ली वांग ने बुद्धा पर हमला कर दिया ।

बुद्धा ने भी अपनी निंजा तलवार निकाल ली। और दोनो मे भयंकर युद्ध शुरू हो गया ....
ली वांग तन्त्र शक्ति से काफी ताकत वर हो गया था। पर बुद्धा जानता था। की वार कहा करना है। बुद्धा ने अपने उंगलियो को एक 'खास' अंदाज मे मोड़ा.. और बेहद फुर्ती से उसके कोहनी पर वार किया।
" आह्ह्ह्ह..."
ली वांग के हाथ से तलवार छूट के गिर गई।
"..धडाक..
एक वज्र मुिठ का प्रहार ली वांग के चेहरे पर पड़ा।
ली वांग चीख मार के दूर जा गिरा ।
अब तो ली वांग क्रोध से पागल हो गया। उसके एक शैतान का रूप ले लिया....

पर बुद्धा उसे देख के तनिक भी डरा नही । बल्कि अपने अंदाज मे मुस्कुरा उठा
शैतान बुद्धा पर टूट पड़ा।
पर कलियारापट्टू विशे"ाज्ञ बुद्धा से बच नही पाया.... बुद्धा ने फुर्ती से अपनी तलवार निकाल के उसका गला काट दिया ....और शैतान ली वांग का अंत हो गया .....
ली वांग को समाप्त करने के बाद बुद्धा वही अपने स्थान पर वापस लौट आया। पर वहा सन्यासी नही था। उसके बाद बुद्धा ध्यान मग्न हो के समाधि मे लीन हो गया......!

राम मोहन अपनी बात खत्म करते हुए कहा !

".ओह तो ये है बुद्धा की जर्नी "
श्यामलाल ने कहा ।
"..हॉ ली वांग को खत्म करने के बाद वो समाधि मे चला गया था। लेकिन मेरी करुण पुकार सुन के उसने समाधि तोड़ी और तुम्हारी मदद की...और कादिर खान और योगराज को खत्म किया "'

' श्यामलाल राम मोहन और बुद्धा ने कादिर खान और योगराज को केसे खत्म किया जानने के लिए पढ़े बुद्धा की पहली कहानी " 'बुद्धा – ए मोंक वॉरियर "'

.."अब दिल्ली सुरक्षित है "
राममोहन ने निश्चिंत होकर कहा।

लेकिन क्या सचमुच दिल्ली सुरक्षित है..?

●●●

'दिल्ली दिल वालो दिल्ली

दिल्ली की रफ़्तार भरी जिंदगी मे किसको फुर्सत है. यहाँ सब मिलेगा। पर नही मिलेगा तो वो है समय।

एक अजनबी कोट और हैट पहने एक टैक्सी वाले के पास आया...
"..बोलो साब किधर चलने को है.."
टैक्सी वाला बोला ।
"..मुझे कही नही जाना। मुझे किसी की तलाश है.."
अजनबी सख्त लहजे मे कहा।
" अरे साब काय को धंधे के टाइम खोटी करता है। किसी को ढूढ़ना है तो पुलिस स्टेशन जाओ.."
टैक्सी वाला बोला।

"..सच मे.."
अजनबी ने कहा।
"..हा साब आप पुलिस स्टेशन जाओ....अच्छा साब आप विदेशी हो ..आप तो चीनी लगते हो"

"..हा मैं चीनी ही हूँ .."
अजनबी ने कहा।
"..अच्छा साब आपको पुलिस स्टेशन छोड़ दु.."

"..नही मैं खुद चला जाऊंगा.."
और वो अजनबी चला गया।

रास्ते मे उसको कुछ गुंडे मिल गए।

"..बड़ा जल्दी जा रीया है...चल इधर माल ढीला कर.."
एक गुंडे ने हंस कर कहा।

अजनबी ने उसे एक नजर देखा फिर उसकी बगल से जाने लगा...

"..अबे साणे। समझ मे नही आया क्या ...चल माल निकाल। नही तो यही चीर डालूँगा '
गुंडा खतरनाक ढंग से कहा।
अजनबी के चेहरे पर रहस्यमय मुस्कान आ गई।
गुंडा चाकू ले के आगे बढ़ा।

"..कड़ाक...."
"..ईयाआ अआ.."
हड्डी टूटने की आवाज के साथ गुंडा चिखा।
अजनबी कोट उतार चुका था
"..ली वांग से उलझ के तुम लोगो ने बहूत बड़ी गलती की है। मूर्खो "
ली वांग ने गुस्से से कहा।
चार और गुंडे ली वांग की ओर झपटे।
"..धडाक.."
एक बार मे चारो गुंडे जमीन मे गिरे हुए नजर आये ।

ली वांग के हाथ तो लोहे से भी सख्त थे। उन चारो हालत खराब हो गई। वो चारो भागने लगे।
तो अचानक ली वांग ने अपना हाथ हवा मे घुमाया.. ओर

"..खच्चाक...."
चारो के सर धड़ से अलग हो गए।
ली वांग ने चुपचाप कोट पहना और एक ओर चल दिया।

'पुलिस स्टेशन –'

ली वांग सीधे अंदर घुसा और हवलदार से कहा।

"..मुझे बुद्धा की तलाश है । वो कहा मिलेगा.."

"..कौन बुद्धा.."
हवलदार ने कान खुजाते हुए कहा
"..बुद्धा...जो बूढ़ा है जो गुप्त युध्द कला जानता है.."
ली वांग ने सख्त अंदाज मे कहा।
"..तस्वीर है .."

"..नही है.."

"..कोई पता ठिकाना..जानते हो.."

"..नही..!"

"..तो ये कौन बुद्धा है यार..."
हवलदार ने हँसते हुए कहा
तभी उधर से इंस्पेक्टर ने कहा।
",..पाण्डु इसे बुद्ध की मूर्ति देके चलता कर ."
इंस्पेक्टर ने हँसते हुए कहा।

"..मुझे बुद्धा चाहिए ..."

"धाड.."
ली वांग ने अपना मुक्का टेबल पर इतनी जोर से पटका । की टेबल जे दो टुकड़े हो गए।
पुलिस लोग हरकत मे आ गए।
"..अबे सरकारी सम्पत्ति को तोड़ता है। धरो इसे . ,इसको बताते है बुद्धा कहा है..."

४–५ हवलदार ने ली वांग को पकड़ लिया ।

"..मैने कहा ना मुझे बुद्धा चाहिए .."
ली वांग ने जोर से कहा। और एक झटका दिया । सारे

पुलिस वाले उड़ते हुए नजर आये।
सारे पुलिस स्टेशन मे खलबली मच गई।

"..शूट हिम "
इंस्पेक्टर चिल्लाया ।
कई गोलिया ली वांग की तरफ चली । लेकिन....ली वांग के पास आते ही हवा मे रुक गई। ली वांग की आँखे चमकी। और गोलिया वापस पुलिस वालो की ओर मुड़ गई। और पुलिस वालो को लग गई ।
सारे पुलिस वाले हैरत से ये दृश्य देख रहे थे । ली वांग अपना कोट हैट उतार चुका था । ....वो किसी भूतकाल के योद्धा की तरह नजर आ रहा था।

"..तुम लोगो मुझे पर हमला कर के। अपनी मौत को बुलाया है.."
ली वांग गुस्से से सबको घूरने लगा। और हाथ को ऊपर उठाया....और पुलिस स्टेशन की सभी कुर्सी टेबल कम्प्यूटर हवा मे उठने लगे...और वो पुलिस वालो पर टूट पड़े । सारे पुलिस वालो खौफ से चिल्लाने लगे ।
"..बचाओ....ये तो कोई शैतान है .."

"..हा हा हा सही कहा मैं शैतान ही हूँ । मुझे बुद्धा चाहिए । ३००० साल से उसे ढूढ़ रहा हूँ। ....उसके लिए ही मैं वापस आया हूँ....मुझे बुद्धा चाहिए अपना बदला लेने के लिए...बुद्धा+++++++"

ली वांग के शरीर से बिजली की तरंगे निकलने लगी । जो सभी पुलिस वालो को जकड़ लिया...सारे दर्द से छटपटाने लगे।
एक हवलदार समझ गया की किस बुद्धा की बात कर रहा है।

"..आह...म..मैं समझ गया। आप वहीँ बुद्धा की बात कर रहे हो ना जिसने योगराज और कादिर खान जैसे अपराधियो को मारा था। उसका पता ठिकाना तो हमारे पास नही .."
तभी एक दूसरा हवलदार बोला ।
"..बुद्धा तो एक हीरो है। और हीरो को बुलाना है तो शहर मे तबाही मचाओ.."

"..तबाही ....विनाश...हा हा हा ...सही कहा सही कहा तुमने विनाश .....बर्बाद कर दूंगा शहरों को तबाही मचा दूंगा सब जगह। तब तो बुद्धा को आना ही होगा.... हा हा हा..."
हवा मे उड़ते हुए ली वांग बाहर निकल गया।
"..अरे ये क्या बोल दिया। अब वो बाहर तबाही मचायेगा .."
एक ने कहा।
"..मुझे क्या पता ...मुझे जो इससे बचने के लिए जो सुझा वो बोल दिया ..."

"..मिलिट्री को फोन करो...सेना बुलाओ.."
इंस्पेक्टर ने कहा।

●●●

ली वांग बीच सड़क मे था ...

"..अब दिखेगा तबाही का नजारा । हा हा हा ..."

ली वांग ने अपना हाथ ऊपर उठाया । और सारी गाड़ियां हवा मे उड़ने लगी। और एक इशारे से । झटके के साथ आपस मे टकराने लगी...

"..धमम्मम..."
बुमम्मम ।

सारी गाडियो मे ब्लास्ट हो गया।
लोगो मे अफरातफरी मच गई सब लोग जान बचा के भागने लगे ।
ली वांग गाडियो और बसो को उठा के इधर उधर फेकने लग गया..
तभी सेना के जवान टेंक और हथियार के साथ वहा आ गए।

"..खबरदार ! हिलने की कोशिश मत करना.."
एक ऑफिसर ने उसे चेताया ।
"..ओह फौज ! "
ली वांग सेना की ओर आगे बढ़ा।
उसे आगे बढ़ते देख ऑफिसर घबरा गया।

"..फायर..."

".तड़ तड़ तड़......"
सैकड़ो गोलिया ली वांग की तरफ बढ़ी। लेकिन ली वांग को जैसे उससे कोई फर्क नही पड़ा। सारे गोलियां उसके शरीर छितरा कर इधर उधर गिर रही थी । ऐसा लग रहा था। की ली वांग पर जैसे कोई फूल बरसा रहा हो। ली वांग आगे बढ़ता ही गया
ऑफिसर भी घबरा गया। उसने दोनो टैंक को इशारा किया ..

दोनो टैंक पोजीशन मे आ गए। ली वांग भी ठिठक गया । ओर..

"..बुम्म..."
दोनो टैंक से गोले छूटे...और सीधे ली वांग के टकराये ।
"..भड़ाम..बुम्म+++++..."

सेना और ऑफिसर हक्के बक्के होकर बो हैरतअंगेज दृश्य देख रहे थे। टैंक के गोले से भी ली वांग का कुछ नही बिगड़ा।
उसने टैंक की नली को पकड़ा और घुमा के दूर फेंक दिया । और अपनी दोनो हथेली से से हवा मे इतनी जोर से ताली बजाई की हवा के दाब से दोनो टैंक के चिथड़े उड़ गए ।

ली वांग ने एक बस हवा मे उठा के सेना पर फेंका .....लेकिन उस बस को हवा मे एक सफेद दुपट्टा ने रोक लिया। और अलग दिशा मे फेंक दिया।
और वो दुपट्टा था.....

"..बुद्धा.."

"..बुद्धा आ गया .."
एक ऑफिसर ने कहा

ली वांग ने एक नजर बुद्धा को देखा ।

"..ओह तो तुम हो बुद्धा....तो तुम आ ही गए ....आज मेरा बदला पूरा होगा । मैं हूँ चीन के महान राजा ली वांग का बेटा ....जब तुमने मेरे पिता और हमारे सम्राज्य को खत्म किया। तब हमारे गुरुदेव ने मुझे छिपा दिया था। तब से ले के मैं काली शक्तियो की घोर तपस्या करता था। ...बस मेरी एक ही इच्छा थी। तुम्हारी मौत ! और जब तुम्हारा नाम मैने यहाँ सुना तो चला आया तुम्हे मौत देने। और अपनी पिता की हत्या का प्रतिशोध लेने। इसलिए मैने अपनी पिता के नाम पे अपना नाम रखा है। ली वांग ......आज तुझे मौत देगा ली वांग..."

ली वांग ने गुस्से से जोर से बुद्धा पर प्रहार लिया .
".धडाक..."

वार भी"ाण था । बुद्धा उड़ते हुए। एक कार से टकराया।
"..धम्म....
लेकिन इस वार से बुद्धा जरा भी विचलित नही हुआ। वो अपने अंदाज मे मुस्कुराया ।
और फुर्ती से उछल के एक लात ली वांग के सर पर जड़ दि।
"..धाड....
ली वांग भी लड़खड़ा गया।
"..ओह तु भी काफी शक्तिशाली है..अब आएगा मजा.."

ली वांग ने अपनी शक्ति से एक कार को हवा मे उड़ा के बुद्धा की ओर फेंका...
बुद्धा ने तुरन्त अपनी निंजा तलवार निकाल ली और बेहद फुर्ती से कार बीच से काट दिया। ...
कार इधर उधर गिर गई।
ली वांग ने कार बस् के टुकड़े को चाकू की तरफ बुद्धा की ओर तेजी से फेंका।
बुद्धा ने बिजली से भी तेजी से अपनी तलवार घुमाया....सारे टुकड़े इधर उधर छिटकने लगे।
अपने वार विफल होते देख ली वांग तिलमिला गया.।

उसके हाथ मे तलवार प्रकट हो गई।

"..अब तुझे मैं अपने हाथो से मारूँगा .." ली वांग ने कहा।

और फिर दोनो भीड़ गए।
"..टनाक....टन.."
ली वांग अगर कुशल लड़ाका था । तो बुद्धा भी प्राचीन योद्धा था।
दोनो काफी देर लड़ते रहे। कभी ली वांग भारी होता तो तो कभी बुद्धा।
कोई परिणाम नही देख ली वांग ने चाल बदल दी।

अब उसने भयानक आग उगलते ड्रेगन का रूप ले लिया ।

"..हा हा हा ...अब तु नही बचेगा .."
ड्रेगन ने बुद्धा को अपनी पुंछ से वार किया।
"..भड़ाक..."
बुद्धा दूर जा गिरा।
फिर ड्रेगन ने जगह जगह आग उगलकर तबाही मचानी शुरू कर दी। लोग डर के मारे भागना शुरू कर दिया ।
बुद्धा फिर ड्रेगन के सामने आ गया । ड्रेगन ने आग उगला। बुद्धा फुर्ती से उछल के बचा। उसने अपना दुपट्टा निकाला। और हवा मे घुमा के फेंका। दुपट्टा सीधे ड्रेगन के गले मे फंस गया।और बुद्धा ड्रेगन की पीठ पर सवार हो गया। ड्रेगन घबरा के इधर उधर आग बरसाने लग गया। बुद्धा ने अपना दुपट्टा उसके गले मे कस दिया । ड्रेगन अब छटपटा रहा था .....
और आखिर मे ली वांग ने ड्रेगन रूप त्याग दिया । और अपने असली रूप मे आ गया।
अब बुद्धा लड़ाई खत्म करने के मूड मे था। उसने तलवार निकाली। और उछल के ली वांग पर वार किया ।
".टनाक...
लेकिन ....
ली वांग पर उसका कोई असर नही हुआ। बुद्धा ने एक के बाद एक तलवार से कई वार किये। पर ली वांग को कोई असर नही हुआ ।

"..हा हा हा ....बुद्धा चाहे जितने वार कर लो। तुम इस कवच को भेद नही पाओगे....काली शक्तियो से युक्त इस कवच को मेरे गुरुदेव ने दिया था। .."
ली वांग ने पलट के बुद्धा पे वार किया।
बुद्धा भी लड़खड़ा गया। ली वांग वार पे वार कर रहा था लेकिन बुद्धा का कोई भी वार। ली वांग को

नही लग रहा था। ...अचानक बुद्धा की नजर । ली वांग के हाथो मे पहने कड़े पर पड़ी......बुद्धा अपने चिरपरिचित अंदाज मे मुस्कुराया ।
अपने हाथ की उंगलियो को खास अंदाज मे मोड़ा । और विद्युत गति से उछलते हुए ली वांग की कोहनियो पर धीरे से वार लिया।

"..पिट..."

हल्की सी आवाज आई । और ली वांग चीख बैठा।

"..आह्हह...म..मेरा हाथ सुन्न हो गया। "

बुद्धा ने फौरन उसके हाथ से कड़े उतार लिए। और कड़े उतरते ही ली वांग के शरीर का कवच भी गायब हो गया।

"..ओह नही मेरा कवच ..."

ली वांग ने घबराते हुए कहा। बुद्धा ने आगे बढ़ कर उसके चेहरे पर घूँसा मारा....

"..धाड..."

".आह्हह...."

फ़िर बुद्धा ने वारो की बौछार कर दी ।

"..आह्हह...मेरा कवच गायब हो गया। मेरी आधी शक्ति छिन गई। अब मुझे बची हुई शक्ति से गुरुदेव के कहने अनुसार। 'मायालोक' का द्वार खोलना होगा । जिसमे बुद्धा फंस जाये ।.."

ली वांग ने कुछ मन्त्र बुदबुदाया । और ....हवा मे एक द्वार बनने लगा...और बुद्धा को खींचने लगा।

"..हा हा हा ये माया लोक का द्वार है। बुद्धा इसमे एक बार तुम चले गए। तो कभी भी नही निकल पाओगे.."

द्वार बुद्धा को तेजी से खींच रहा था। बुद्धा ने एक बिजली खंभे को पकड़ लिया ....फिर भी वो काफी नही था। द्वार बुद्धा को तेजी से खींच रहा था।

"..हा हा हा। कितनी भी कोशिश कर लो। आज नही बच पाओगे। हा हा हा..."

ली वांग शैतानी हंसी हँसते हुए कहा ।

बुद्धा उसकी हँसी का जवाब मुस्कुराते हुए दिया। और झट से अपना दुपट्टा निकाला। और उसे एक झटके से ली वांग की ओर फेंका। दुपट्टा ने ली वांग को लपेट लिया...बुद्धा ने एक जोर से झटका दिया। और ली वांग उड़ते हुए द्वार मे समा गया।

"...आह्हह....नही....."

ली वांग के द्वार मे समाते ही द्वार बन्द हो गया ।

और चारो ओर शांति छा गई ।

ये सब दृश्य पुलिस वाले और लोग। फटी फटी आंखो से देख रहे थे। उसे तो विस्वास नही हो रहा था। पुलिस कमिश्नर बुद्धा के पास आया ।

"..बुद्धा...आज तुमने सैकड़ो लोगो को उस शैतान से बचाया । इसके लिए बहूत बहूत धन्यवाद ....तुम सचमुच एक सुपरहीरो हो । बुद्धा!"

बुद्धा कुछ नही बोला। बस अपने अंदाज मे मुस्कुरा दिया। और चला गया ..!

कमिश्नर भी खड़े खड़े मुस्कुरा रहा था।

'समाप्त'

बचपन की वो कॉमिक्स

कमल पटेल

घर में बैठा था एकांत, मन था अशांत।
शान्ति कही खो गई, जिंदगी बोझल हो गई।
तभी माँ की आवाज आई, बेटा ये क्या है?
माँ के हाथ में एक थैली थी, कुछ गन्दी कुछ मैली थी।
उसे देखते ही मै चहक उठा, अशांत मन महक उठा।
वो थैली थी खास, जो आ गई मेरे पास।
मैने उसे खोली , उसमे था पुस्तक का भंडार ।
राज कॉमिक्स की वो पुस्तके ,थी कभी मेरा संसार।

कॉमिक्स को पाकर मै भाव विभोर हो गया,
चिंता सब छोड़कर, अपने बचपन में खो गया।
पहली कॉमिक्स जो मैने पढ़ी, उसका हीरो था नागराज
सांपो का था राजा, मिटाया जिसने आतंक का राज।
नागराज की विष फून्कार , अपराधियो को धुल चटाया।
स्नेक स्टाइल की दावो ने , उनको सबक सिखाया।
बचपन की बातो को सोच कर,मैने मन में ठानी है।
सच्चाई की राह में चलकर , अब सफलता पानी है।

बचपन की कॉमिक्स ने मुझको,नई राह दिखालाई।
ध्रुव ने कठिनाइयो में हमेशा,अपनी दिमाग चलाई।
पशु पक्षी से दोस्ती करके, करते रहे भलाई।
बुद्धि और कोशल के बल पर, जीती कई लड़ाई।
ध्रुव की कॉमिक्स ने बताया, बुद्धि में कितना बल है
मेहनत से ही हर मानव का,बढ़ा यहाँ मनोबल है

बचपन की वो कॉमिक्स ने मुझे, नई आशा है दिखलाई।
निराशा सब भूलकर, उम्मीद नई है पाई।

सूरज पॉकेट बुक्स

सूरज पॉकेट बुक्स की उत्पत्ति हुई अक्टूबर २०११ में जब शुभानंद ने 'राजन इक़बाल की वापसी नामक'बाल उपन्यास लिखा जिससे बाल पॉकेट बुक्स में बीस साल से आये सूखे को पानी की एक बूँद नसीब हुई सोशल मीडिया के ज़रिये राजन इक़बाल और 'एस सी बेदी' के पुराने प्रसंशको ने इसका स्वागत कियां

वर्ष २०१६ इस संस्था में कई नए लेखको का आगमन हुआ जिनकी लेखनी पढ़कर पाठकों ने उन्हें पलकों पर बैठा लियां नए लेखकों को पहली ही पुस्तक से ऐसी ख्याति और प्रसिद्धि मिली कि वह खुद चमत्कृत रह गएं

धीरे धीरे ये संस्था सूरज के समान साहित्य जगत में जगमगाने लगीं

हाल ही में इस संस्था से बड़े नाम जुड़ चुके हैं जैसे कि 'एस सी बेदी', जो खुद एक तरह से इस संस्था की उत्पत्ति के लिए प्रेरणा स्रोत थे और नागराज, अंगारा जैसे कॉमिक्स पात्रो के रचयिता 'परशुराम शर्मा'

अब ये संस्था एक कदम और जाकर विश्व विख्यात लेखकों की रचनाओं का उच्च कोटि हिंदी अनुवाद प्रस्तुत करने वाली हैं, इसकी शुरुआत ली चाइल्ड(स्ममब ीपसक) से होगी जोकि विश्व में थ्रिलरश्रेणी में सबसे ज्यादा बिकने वाले लिखको में से एक हैं,जिनके उपन्यास पर हाल में ही टॉम क्रूज की जैक रीचर सीरीज़ की फिल्म रिलीजहुई हैं

पाठकों के निरंतर राय के मुताबिक अपने कार्य में अनुसन्धान करने से इनकेलेखक हिचकिचाते नहीं हैं यहीं कारण है कि ये लेखक एक दो किताब लिखते हीपाठकों के बीच लोकप्रिय हो गये हैं

उभरते लेखकों को मौका देकर उनकी रचनाओं को निखारकर सूरज पॉकेट बुक्स ने दुनिया के सामने मौजूद कराया हैं

इस संस्था का उद्देश्य है कि नए और पुराने लेखकों के द्वारा भारतीय पाठक वर्ग को ऐसी किताबे मुहैया कराएं जिन्हें पढ़कर उनका भरपूर मनोरंजन और ज्ञान में बढ़ोतरी हों

सूरज पॉकेट बुक्स की सभी किताबे बड़ी आसानी से आपको सभी ऑनलाइन स्टोर्स पर मिल जाएँगी जहाँ कम से कम कीमत में किताबे पाठको तक पहुंचाने में प्रयासरत हैं

सूरज पॉकेट बुक्स स्वागत करता है सभी नए और पुराने लेखकों को जो इस पब्लिकेशन से जुड़ना चाहते हैं

अगर आप एक लेखक या आर्टिस्ट हैं आप हमसे संपर्क कर सकते हैं हमारे फेसबुक पेज पर या फिर हमें मेल कर सकते हैं
Soorajpocketbooks@gmail.com पर !




आर्टवर्क - अनुज कुमार

प्यारे दोस्तों,

COP टीम के अथक परिश्रम और माथापच्ची के बाद आज अनिक प्लैनेट अन्ततः आपकी स्क्रीन पर है। आज तक हमने सिर्फ पत्रिकाएं पढ़ी थीं पर पत्रिका बनाने का हमारा यह पहला प्रयास था। हमने हर सम्भव कोशिश की है इसे पूरी तरह से प्रोफेशनल स्पर्श देने की। अब चूंकि यह पहला प्रयास है तो गलतियां होनी भी बिलकुल लाजिमी है। हमारा आपसे विशेष अनुरोध है कि आपको अनिक कैसी लगी पढ़ने के बाद हमें अवगत अवश्य करवाएं इससे हमारा मनोबल बढ़ेगा और गलतियों की ओर ध्यान भी जायेगा।

अनिक प्लैनेट अस्तित्व में कैसे आई इसके बारे में भी बताना चाहूँगा। दरअसल ये आइडिया मोहित भैया (मोहित शर्मा) जी का था जिसे उन्होंने कबीर के साथ साझा किया। हम सभी को ये विचार इतना ज्यादा अच्छा लगा कि अगले दिन से ही हमने इस पर काम करना शुरू कर दिया। हमारी खुशी का कोई ठिकाना ही नही रहा जब COP के लगभग हर रचनाकार ने इस प्रोजेक्ट से जुड़ने की इच्छा जताई।

अब हमारे पास आइडिया भी था और टीम भी पर क्या करना है किसी को कुछ पता नही था सिवाय इसके कि मैगज़ीन आएगी। धीरे धीरे सबकी सलाह मशविरा से कंटेंट निर्धारित हुआ और काम शुरू हुआ। अभिराज ने कलेक्शन का काम अपने हाथों में लिया और मैंने डिजाइनिंग का। युध्द स्तर पर काम शुरू हो गया । रचनाकारों ने लगभग समय पर काम पूरा किया पर डिजाइनिंग और एडिटिंग में थोड़ा ज्यादा समय लग गया जिसकी वजह से अनिक को आने में १० दिन की देरी हुई।

अनिक पूरी तरह से एक टीम वर्क है जिसके लिए मैं अपने सभी साथियों का दिल से धन्यवाद देना चाहूँगा। COP के मेरे सभी दोस्तों ने इस बार दिल जीत लिया। मैगज़ीन पढ़ने के बाद आप सब के मन में COP के बारे में जानने की भी इच्छा हुई होगी। हमारे प्यारे **ऋषभ** भाई आपको इस बारे में बताएंगे आइये उनके शब्दों में जानते हैं कि COP क्या है

“हम fans थे...सिर्फ fans! अपने आप में खोये रहने वाले...उन बोलती तस्वीरों से बात करने वाले जो एक किताब की शक्ल में हमारे हाथों में तब तक रहती जब तक की आखिरी पन्ना “समाप्त” या “क्रमशः” न कह देता!! कभी कभी तो एक सांस में वो किताब खत्म हो जाती जिसे कॉमिक्स कहते हैं...हमने स्कूली किताबों को बस formality समझा और चित्रकथाओं को ज़रूरत।।

प्रेरणा, उत्साह, कल्पना सब मिलती हमें उनसे; कई बार तो सपने भी! अक्सर सोचते की उनके जैसा बनना है या फिर वही बनना है– हरी खाल वाला, नीले पीले कपड़ो वाला या, कुत्ते की शक्ल वाला भी नंगे बदन सर पे लाल पट्टी बाँध कर हंगामा करने वाला भी!!

उनसे अपनी पक्की यारी रही है...इस हद तक की अपनी मम्मी और अपने पापा से भी बकझक करने से न चूकते थे, और गाहे बगाहे तो हरा भी देते थे...पर आप समझ सकते हैं!!

महाभारत, श्रीकृष्ण, शक्तिमान अगर हमारे बचपन के गवाह रहे हैं तो वो रंगीन कागज़ी पन्ने उनसे पहले के परिचय।।

पर फिर हम बड़े हो गए...और उम्र ऐसी की साथ में एक तकनीक नाम का dominating चरित्र भी बड़ा होने लगा...वो मानो रोज़ एक मन बहकाने वाला पतंग उड़ाता और हम उसके पीछे भागना नितांत आवश्यक मान लेते...कभी रंगहीन मोबाइल, कभी रंगीन मोबाइल; कभी रंगहीन टीवी तो उसके बाद रंगीन टीवी...और जाने क्या क्या!! चैनल्स, और इंटरनेट ने फंदा फेंका और हमने कंठहार समझ कर उसे गले में पहन भी लिया!!
थोड़ा उन्होंने कसा थोड़ा खुद हमने...

हम fans थे...हममें से कुछ गृहस्थ हो गए; कुछ ज़िन्दगी की भगमदौड़ की स्थिति से सामन्जस्य बिठाने में व्यस्त!! हमको पश्चिम से आती गरम सर्द हवाओं ने भी बीमार किया... और उन प्रेरणा; सपनों और रंगों–चित्रों के पन्नों से बंधी डोर थोड़ी ढीली हो गयी....थोड़ी क्यों लगभग छूट ही गयी!!

कॉमिक्स के न निकलने की खबरें भी सुनी पर हम तो हर वक़्त उनके साथ रहे...यकीन ही न कर पाये की कॉमिक्स आनी बंद हुई हैं...कुछ प्रकाशक बंद ज़रूर हुए थे पर एक प्रकाशक जूनून ज़िंदा रखे हुए था!! उनकी पहुँच ज़रूर घटी थी लेकिन हम पर उसका भी कोई असर नहीं हुआ क्योंकि पहुँच उनकी कम हुई थी हमारी नहीं!!

वक़्त बीता और कॉमिक्स और हमारे बीच तकनीक की जो दीवार थी उसी दीवार में खांचे बना कर हम उसे फांद गए...आखिर हम fans हैं ऐसे कैसे दूर रहते...दीवार के उस पार अपने जैसे ही कई चेहरों के रु ब रु हुए...कलाकारों लेखकों जिनके नाम कॉमिक्स के पहले पृष्ठ पर देख कर उत्साहित होते थे उनसे बात करने का सुअवसर प्राप्त हुआ....और कई रिश्ते बन गए जिनका आधार ये बोलती चित्रों वाले पन्ने ही थे!!

हमारी कहानी कॉमिक्स के अंतिम पृष्ठ पर लिखे समाप्त शब्द पर कहाँ ख़त्म होनी थी!! वो तो निरन्तर चलती रही आजतक चल रही है...

Facebook के ज़रिये Whatsapp तक हम Fans जुड़ने लगे...ऐसा ही कई जोड़ों में से एक जोड़ है COP Comics Our Passion!! अपने आप में अनोखा..कम उम्र के लड़कों द्वारा शुरू हुआ समूह जिसमे हर उम्र के दीवाने हैं...

अपने पसंदीदा हीरो को सर्वश्रेष्ठ बताने के लिये सही गलत हर तरह के तर्क़ देने वाले दीवाने...

Super Commando Dhruv को नाम से न बुला के Captain कहने वाले दीवाने...

कॉमिक्स के बीते इतिहास से आज की पीढ़ी की मुलाक़ात कराने वाले तो कॉमिक्स की रोमांचक दुनिया में नए भरती हुए रंगरूट भी...

कॉमिक्स किरदारों पर अपनी कल्पना की लेखनी फिराने वाले भी जिन्हें बस लिखना होता है बिना किसी फायदे की सोच के!!

कुछ बेहतरीन तो कुछ कम बेहतरीन लेकिन जूनून में समकक्ष कलाकार भी...

कॉमिक्स की कल्पना से परे कोरी कल्पनाओं को भी जगह देकर नए आयाम सोचने वाले लोग भी हैं!!

एक ऐसा परिवार जिसमे विविध बर्तन रहते हैं जो टकराते हैं, तो खनकते भी हैं!! मगर सोच में बस एक बात की कॉमिक्स ने जो दिया उसका एक हिस्सा भी उसे लौटाने की सोच...इस दुनिया के विस्तार की सोच जो आभासी होकर भी एक सम्पूर्ण अंग है हमारा!!

हम COP हैं मगर पहले fans हैं...और हमसे जब भी बचपन का पता पूछा जाएगा हम अपने विजिटिंग कार्ड में कोई कॉमिक्स आगे बढ़ा देंगे और जब जवानी को ढूँढने की बात होगी तो एक पन्ना ब्व का उसमे होगा...जिसे रंग कर हम आगे की पीढ़ी को देंगे...जिसके सहारे वो इस कल्पनातीत दुनिया के सफर में आगे बढ़ते जाएँ...!!

हमारे जूनून का अंत नहीं...कवर से शुरू होकर अंतिम पन्ने के आखिरी डायलॉग पे बस एक कहानी समाप्त होती है...कॉमिक्स नहीं...जूनून तो बिलकुल नहीं!!

ये हमारा सत्य है यही शास्वत है...यह भी हिस्सा है...ये भी दुनिया है!!

हम Fans हैं हमेशा से हमेशा के लिए...“

COP के बारे में विस्तृत जानकारी हम आगे के अंकों में देते रहेंगे तब तक आप पत्रिका का लुफ्त उठाइये। अपने सुझाव और विचार हमें comicsourpassion@gmail.com पर मेल करना ना भूलें। आप चाहें तो हमसे Facebook और Whatsapp के माध्यम से भी जुड़ सकते हैं।

धन्यवाद। आपका – निशान्त मौर्य